✶ वर्ष 45 ✶ अंक 3
✶ मार्च 2018

हँसती दुनिया

₹15/-

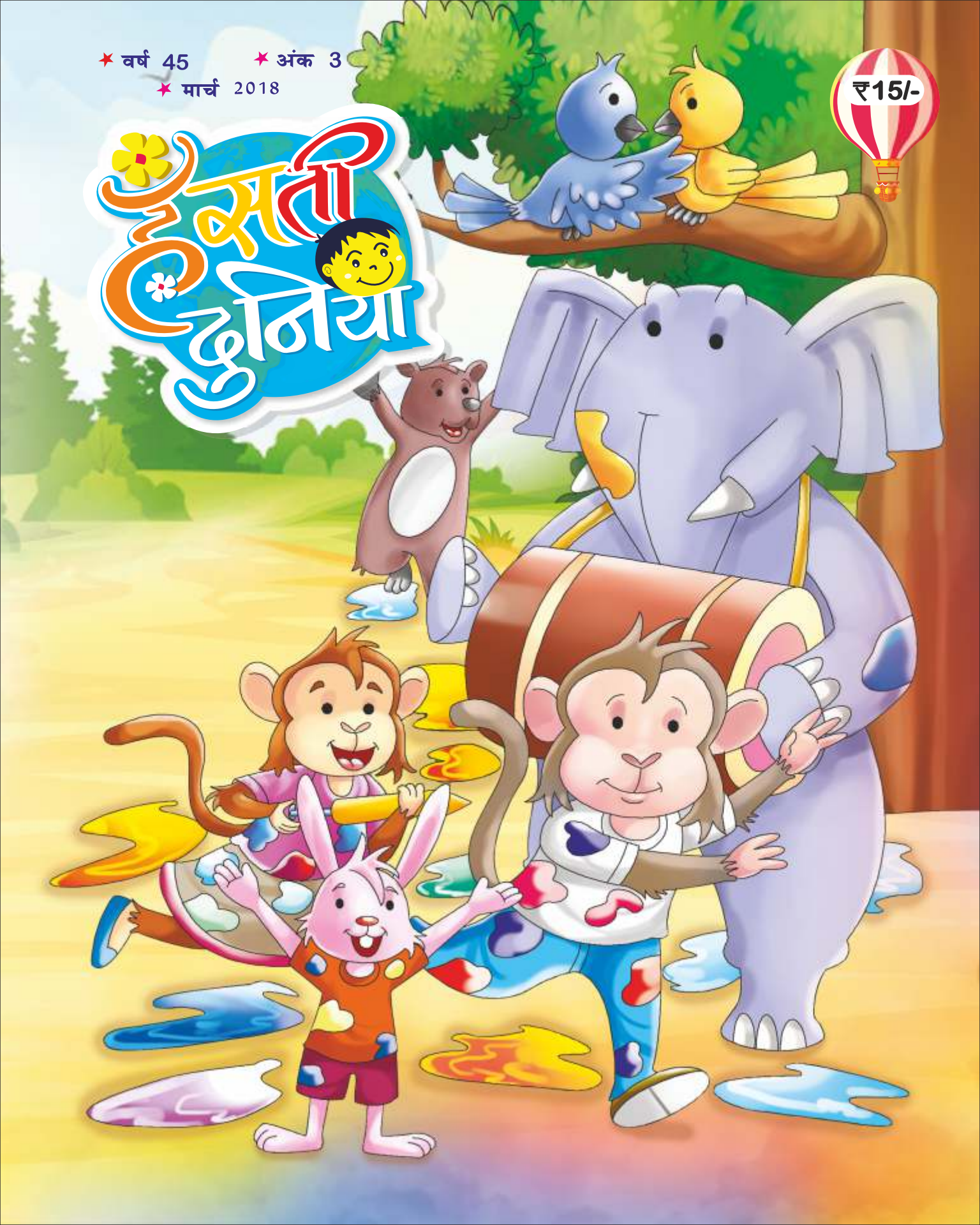

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 3 ● मार्च 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
16. समाचार
21. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादाजी
34. किट्टी

कहानियां

9. इस होली में ...
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहांपुरी'

23. पायलट बनूंगा
: डॉ. राजीव गुप्ता

28. अहंकार का आवरण
: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

38. षड्यंत्र
: राजेन्द्र यादव 'आजाद'

47. तीन बातें
: विभा वर्मा

कविताएं

6. होली
: महेन्द्र सिंह शेखावत

6. होली आई
: कीर्ति श्रीवास्तव

19. दिल से मनाओ होली
: अर्जुन क्वात्रा

19. सबको गले लगाती
: राजेन्द्र निशेश

25. जल महिमा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

41. सब खेलो होली
: कमलसिंह चौहान

43. कहानी होली की
: सुनैना अवस्थी

47. भगतसिंह थे राष्ट्रवीर
: हरजीत निषाद

विशेष/लेख

8. उत्साह बनाएं रखें परीक्षा में
: विभा वर्मा

17. हांगुल
: डॉ. परशुराम शुक्ल

20. पानी से बनेगा डीजल
: किरण बाला

22. जोसेफ का दृढ़ संकल्प ...
: फेनम सोगानी

26. जानवर अपने घर का ...
: डॉ. विनोद गुप्ता

30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

31. बरमूदा त्रिकोण
: दीपांशु जैन

42. विश्व की सबसे लम्बी .
: विद्या प्रकाश

सत्यमय जीवन

ठंड बहुत पड़ रही थी। सभी बच्चे ठंड में ठिठुर रहे थे। तभी दादाजी का आगमन हुआ। बच्चों ने दादाजी को प्रणाम किया और कहा– दादाजी आज बहुत बादल छाए हुए हैं और सर्दी भी बहुत लग रही है जबकि हमने ऊनी कपड़े भी पहन रखे हैं। बताइए अब हम क्या करें?

दादाजी चुपचाप उठे और साथ के कमरे में गये और बहुत बड़ा और अच्छा–सा चित्र बच्चों के पास लेकर आए और बोले– बच्चों! यह देखो, यह खूबसूरत–सा सूर्य का आग उगलता हुआ चित्र है जिसमें अनेकों लोग पसीने में भी भीगे हुए हैं।

बात पूरी होने से पहले ही एक अधीर बच्चे ने कहा– इस चित्र का हम क्या करें?

दादाजी बोले– देखो कितनी गर्मी पड़ रही है, सूर्य की किरणों में अनेकों लोग पसीने–पसीने हुए जा रहे हैं। आप भी सूर्य की गर्मी ले लो और अपनी–अपनी ठंड दूर करो।

सभी बच्चे अवाक् होकर एक–दूसरे को देखने लगे कि अब क्या कहें। आज सच में ही दादाजी की तबियत खराब है जो इस तरह की बहकी–बहकी बातें कर रहे हैं।

आखिर एक बच्चे ने कह ही दिया कि इस तरह से तो कभी ठंड दूर नहीं हो सकती।

इस प्रतिक्रिया पर दादाजी ने कहा– यही तो मैं कहना चाहता हूँ कि सूर्य के हजारों सुन्दर चित्र बनाकर अपने चारों तरफ खड़े कर लो फिर भी इससे न तो गर्मी मिलेगी और न ही सूर्य का प्रकाश। लेकिन वास्तव में जब सूर्य निकलता है तो उसका प्रकाश स्वयं ही प्रकाशित होकर पूरे संसार को आलोकित कर देता है। सूर्य अन्धकार को दूर कर देता है और सभी को जीवन भी देता है।

इस तरह हम अनेकों अच्छे–अच्छे कर्म करते हुए विद्वानों, भक्तों और प्रख्यात शिक्षकों के चित्रण एवं शिक्षाओं को अपनी लाइब्रेरी का हिस्सा बना लेते हैं और आगे उनको पढ़कर, लोगों को सुनाकर खुश होते रहते हैं। अगर हम अपने शिक्षकों की शिक्षा को पुस्तकालयों तक ही सीमित न रखकर उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में, अपने आचरण में अपना लें तो वह शिक्षा सूर्य की वास्तविक रोशनी का काम करेगी। फिर आपका कर्म आपके शब्दों को भी सार्थक करेगा और दूसरों के लिए भी प्रेरणा–स्रोत बनेगा।

इस प्रकार की शिक्षा देने का श्रेय जाता है हमारे दादाजी को, जिन्होंने स्वयं अपने जीवन में सत्य को जानकर, सत्य को अपनाया और सत्य को सत्य की तरह जिया तथा अपने कर्मों से जगत को भी प्रभावित किया। ऐसे थे हमारे दादाजी। उनका नाम था– श्री जे. आर. डी. सत्यार्थी। जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन सत्य–मार्ग पर चलते हुए परमात्मा की जानकारी प्राप्त करके परमात्मामय होकर जीवन जिया और 29 जनवरी, 2018 को नश्वर शरीर त्याग कर निराकार के साथ निराकारमय हो गए।

हमारा सारा परिवार आपको शत्–शत् नमन करता है।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 165

कई ज़बानां कर के कठियां उस्तत इसदी गाइये जे।
कवि इकट्ठे कर दुनियां दे उपमा एहदी लिखाइये जे।
विद्वानां दे मुंहों कर के महिमा एहदी सुणाइये जे।
विच समुन्दर पा के स्याही घोल दवात बणाइये जे।
फिर वी इस दातार प्रभु दा गीत ना गाया जांदा ए।
कहे अवतार इस पारब्रह्म दा अंत ना पाया जांदा ए।

भावार्थ : बाबा अवतार सिंह जी इस पद में बता रहे हैं कि पारब्रह्म परमात्मा जो कण–कण में समाया हुआ है इसका आदि–अन्त नहीं पाया जा सकता। इस प्रभु की स्तुति करने के लिए कितनी ही जुबानें एकत्रित कर ली जाएं फिर भी पूर्णतया इसकी महिमा नहीं गाई जा सकती। दुनिया के तमाम कवि इकट्ठे कर लिए जाएं और उनसे इस प्रभु की उपमा–प्रशंसा लिखवाई जाए फिर भी इसे पूरी तरह लिखा नहीं जा सकता। विद्वान अपनी विद्वता का प्रयोग करके इसकी महिमा सुनाना चाहें तो वह प्रयास भी सफल नहीं होगा। सभी महासागरों में स्याही घोलकर यदि दवात (स्याही रखने का पात्र) बना लिया जाए तब भी इस बेअन्त निराकार–प्रभु की महिमा लिखना या वर्णित कर पाना सम्भव नहीं है। भाव कितने भी यत्न कर लिए जाएं इस प्रभु के गीत नहीं गाए जा सकते।

बाबा अवतार सिंह जी ब्रह्माण्ड को बनाने और चलाने वाले पारब्रह्म को आदि–अन्त से परे बताते हुए इन्सान की अवस्था सागर की तुलना में एक बूंद के समान बता रहे हैं। इस प्रकार सद्गुरु के चरणों में बैठकर इस प्रभु के प्रति समर्पण ही एक मात्र उपाय है। किन्हीं अन्य उपायों से इसे प्रसन्न कर पाना सम्भव नहीं है।

हरदेव बाणी सार

अरबों खरबों देने पर भी एक मिलेगी सांस नहीं।
सांसें हैं अनमोल कितनी क्या तुझको अहसास नहीं।

सांसों की लड़ी सुमिरण की लड़ी बना ले मन मेरे।
कहे 'हरदेव' इन सांसों का लाभ उठा ले मन मेरे।

तीन काल ये सत्य है रहता इसका आर न पार है।
कहे 'हरदेव' कि इसी को कहते निरंकार दातार है।

गुरसिख है सन्तान गुरु की गुरु है पिता गुरु माता है।
कहे 'हरदेव' अटूट सा ये शिष्य गुरु का नाता है।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

होली

गगन में उड़ता लाल–गुलाल,
रंगे बच्चों के बदन लाल।

कोई छोड़े भर पिचकारी,
किसी के पूरे काले गाल।

बुरा नहीं मानों होली है,
थोड़ी–सी हँसी–ठिठोली है।

दो पल मिलजुल खेलें सारे,
यही तो एक रंगोली है।

एक वर्ष से आती होली,
मन में उमंग जगाती होली।

आशाओं से अपनी झोली,
खुशियों से भर जाती होली।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

होली आई

होली आई, होली आई,
बच्चों पर है मस्ती छाई।

पहले पहन पुराने कपड़े,
हुरियारों की टोली बुलाई।।

सबके चेहरे रंगे–पुते हैं,
इक–दूजे की हँसी उड़ाई।।

बच्चों को आई रूलाई,
मम्मी ने जब की रगड़ाई।

अगले साल नहीं खेलेंगे,
इस बार फिर कसम है खाई।।

संग्रहकर्ता : रामअवध राम (गुरैनी)

अनमोल वचन

★ शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है।

★ ऐसी पुस्तक का अध्ययन प्रतिदिन अवश्य करें जो आपकी आत्मिक शारीरिक और सामाजिक उन्नति में सहायक हों।

★ जो जैसी संगति करता है, वैसा ही फल पाता है।

★ आलस्य एक प्रकार की हिंसा है।

★ मानव सेवा से बढ़कर कोई नैतिक नियम नहीं है।

★ काम की अधिकता नहीं अनियमितता ही आदमी को मार डालती है।

★ जहाँ ज्ञान है वहाँ अहंकार नहीं, जहाँ अहंकार है वहाँ ज्ञान नहीं। — महात्मा गाँधी

★ सफलता का पहला रहस्य है—आत्मविश्वास।

★ जीवन में आशा और निराशा धूप–छांव के समान होते हैं।

★ आदमी की खुशहाली उसकी सच्ची ईमानदारी का फल है। — इमर्सन

★ भय और शक जीवन की गंगा में विष घोल देता है। —लोकमान्य तिलक

★ बुराई के सामने झुकना कायरता है।
— सुभाषचन्द्र बोस

★ पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी होते हैं। — बनारसीदास चतुर्वेदी

★ उस दान में कोई पुण्य नहीं जिसका विज्ञापन हो। — मसिलन

★ दया ही धर्म की जन्मभूमि है।
— चाणक्य नीति

★ धरती के सारे खजाने भी एक खोया हुआ क्षण वापस नहीं ला सकते।
— फ्रांसिस लोकोक्ति

★ भाग्य साहसी का साथ देता है। — वर्जिल

★ साहस वीरों का प्रथम गुण है। — सुभाषित

★ स्वास्थ्य ही धन है। — बुल्वर लिटन

★ मानव का दानव बनना उसकी हार है। मानव का महामानव बनना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव बनना उसकी जीत है।
—डॉ. राधाकृष्णन

★ जिस प्रकार सागर पार करने का साधन नाव है उसी तरह सुख प्राप्त करने का साधन सत्य है। — महाभारत

★ पुष्प की सुगन्ध हवा के विपरीत नहीं जाती परन्तु सद्‌गुणों की महक सब तरफ यानी चहुंओर फैल जाती है।

★ अभिमान की अपेक्षा विनम्रता से अधिक लाभ है। —गौतम बुद्ध

★ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त बर्बाद न करो बल्कि उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

★ अपने आप से सत्य बोलना ही सच्चा सत्संग है।

★ गुणों को अपनाना ही
उसकी अच्छी सराहना है।
— लोकोक्ति

विशेष आलेख : विभा वर्मा

उत्साह बनाएं रखें परीक्षा में

परीक्षा एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही अक्सर छात्र–छात्राएं भयभीत हो जाते हैं। भय का यह भूत इनके सर पर इस कदर चढ़ जाता है कि न ये ढंग से खा पाते हैं, न ठीक से सो पाते हैं। हर समय ये तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। इससे इन्हें लाभ के बजाय हानि ही अधिक होती है। यदि कुछ खास बातों को ध्यान में रखकर परीक्षा की तैयारी की जाए तो निश्चित रूप से अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने में आप सफल हो जायेंगे।

अध्ययन की पहली आवश्यकता एकाग्रता है। जो अभ्यास एकाग्रचित होकर किया जाता है वह निश्चित रूप से मस्तिष्क द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि कुछ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी पायी जाती है। आप अपने सालभर किए गए अभ्यास पर भरोसा रखें। अपने आप में इस भावना का विकास करें कि जो अभ्यास मैंने किया है वह पर्याप्त है। चाहे जैसा प्रश्न–पत्र आए मैं उसे करने में समर्थ हूँ।

विद्यार्थी में उत्तर पुस्तिका मिलने से लेकर प्रश्न–पत्र मिलने तक के समय में मनोवैज्ञानिक दबाब बढ़ जाता है। पर यही समय है आपको अपने पर नियंत्रित करने का। प्रश्न पत्र मिलने पर आरम्भ से एक बार धैर्य रखकर पूरा पढ़ें। आवश्यकता पड़े तो दुबारा ध्यान से पढ़ें कि किस प्रकार हल करना है, कितना लिखना है, किस प्रश्न में कितना समय लगाना है, कौन–सा प्रश्न कितने नम्बर का है।

टिप्पणी जैसे प्रश्नों के उत्तर देने में अनावश्यक विस्तार न दें। जितने शब्दों में पूछा है उतना ही रखें। टिप्पणी वाले प्रश्नों में कितने नम्बर का है तभी विस्तार में जाएं।

प्रश्न पत्र पढ़ते समय मुख्य पॉइंट्स मुद्दों को गहरी रेखा से अंडर लाइन करें। अनिवार्य प्रश्नों पर निशान लगाएं।

प्रश्न पत्र हो जाने पर अपना मूल्यांकन स्वयं कर लेना चाहिए। हर स्थिति में उत्साह बनाएं रखें।

पहले आसान लगने वाले प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह लिखें। फिर क्रमशः कठिन प्रश्नों पर आएं।

निश्चिन्त होकर खुशी व उत्साह के साथ समय से पूर्व ही परीक्षा भवन में पहुँचें। देर से पहुँचने की हड़बड़ाहट और घबराहट आपके सोचने–समझने का संतुलन बिगाड़ सकता है।

बाल कहानी : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

इस होली में ...

हरीश आज बहुत खुश था। इस बार वह होली का त्योहार मनाने अपने राजू चाचा के घर जो जा रहा था। उसके राजू चाचा का घर शहर में था। गाँव की होली तो वह हमेशा खेलता ही था, शहर में होली कैसे खेली जाती है। यह सोच–सोचकर वह रोमांचित हो रहा था।

हरीश को सबसे अच्छा होली का त्योहार लगता था। होली के पंद्रह दिन पहले से ही वह अपने साथियों के साथ होली की तैयारी शुरू कर देता था। उसकी टोली के सभी साथी पूरे गाँव में सूखे पत्तों, पेड़ों की सूखी डालियों आदि को इकट्ठा करना शुरू कर देते थे। गोबर से बने उपलों की खूब बड़ी होलिका बनाई जाती थी। होली जलाने के बाद गाँव के लोग एक–दूसरे के गले मिलकर गुलाल लगाते थे। टोलियां बनाकर राग–रागिनी गाते एवं खूब नाच–गाकर खुशी मनाते।

उसने सुना था कि शहर में लोग खूब बड़ी होलिका जलाते हैं। उसका भी बहुत मन होता था कि वह भी एक बार शहर की होली देखे। पिछले माह जब राजू चाचा ने उससे कहा था कि इस बार वह शहर में होली मनाए। चाचा की बात सुनकर हरीश की खुशी का ठिकाना नहीं रहा था। माँ और बापू ने भी उसे होली की छुट्टियों में राजू चाचा के घर भेजने की सहमति दे दी थी।

सुबह–सुबह वह बापू के साथ बस में बैठकर शहर की ओर चल पड़ा। वह बस में खिड़की के पास वाली सीट पर बैठा बाहर का नज़ारा देख रहा था। बस सरपट भागती जा रही थी। अचानक उसकी नज़र सड़क के किनारे लगे पेड़ों को काटते हुए लोगों पर गई। किनारे लगे सारे बड़े–बड़े पेड़ काटे जा रहे थे। यह देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने बापू से पूछा कि ये लोग तो खुले आम पेड़ काट कर रहे हैं। इन्हें कोई रोकता क्यों नहीं।

हरीश की बात सुनकर बापू ने बताया कि सरकार ही इन पेड़ों को कटवा रही है। इन्हें काटकर रास्ता बनाया जा रहा है, जिससे सड़कें चौड़ी हो सकें और यातायात व्यवस्था अच्छी हो सके। लेकिन बापू की बातों से हरीश संतुष्ट नहीं

हुआ। उसे इतने सारे पेड़ों के कटने का बहुत दुःख हो रहा था। उसने पढ़ा था कि पेड़ों के काटने से पर्यावरण पर अत्यंत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जंगलों और पेड़ों के काटने से ही सूखा, बाढ़ आदि जैसी दैवीय आपदाएं आती हैं। धरती पर पेड़ों की कमी के कारण ही गर्मी लगातार बढ़ रही है। इतना सब कुछ क्या सरकार को नहीं मालूम होगा? नहीं... नहीं... ऐसा नहीं हो सकता। उसे तो ये सब जरूर पता होगा। फिर भी हमारी सरकार पेड़ कटवा रही है।

होली की तस्वीरें अब उसके दिमाग से बिल्कुल साफ हो चुकी थीं। उसे लग रहा था कि अनगिनत हरे–भरे पेड़ कटवाकर सरकार निश्चय ही सही नहीं कर रही है। लेकिन सरकार गलत भी कैसे कर सकती है? हरीश जितना सोचता, उतना ही अपने ही प्रश्नों में उलझ जाता। जब उससे नहीं रहा गया तो उसने बापू से पूछा, ''बापू इतने सारे हरे पेड़ काटने से सरकार को उससे पड़ने वाले प्रभावों के बारे में क्या मालूम नहीं होगा?''

''जरूर मालूम होगा। लेकिन सरकारी आदेश को कौन टाल सकता है बेटा!'' बापू ने कहा।

हरीश गुमसुम–सा हो गया था। कुछ देर बाद शहर आ गया। बस अड्डे पर बस रूकी तो राजू चाचा बस के पास ही आ गए। वह उसे लेने आए थे। सब लोग ऑटो–रिक्शा पर बैठकर चाचा के घर चल दिए। हरीश पहली बार ऑटो–रिक्शा पर बैठा था। उसे शहरी की भीड़–भाड़ देखकर बहुत ही अचम्भा हो रहा था। जिधर भी देखो, लोगों की भीड़ दिखाई पड़ रही थी। चारों ओर बस शोर ही शोर था।

थोड़ी देर में सब लोग चाचा के घर पहुँच गए। भोजन करने के कुछ देर बाद वह चाचा के साथ घूमने गया। बाजार में पिचकारियों, रंग, गुलाल तथा अन्य सामानों से सजी हुई बड़ी–बड़ी दुकानें देखकर उसे बहुत अच्छा लग रहा था। रास्ते में एक चौराहा पड़ा। वहाँ सड़क के किनारे कुछ कटे हुए पेड़ों के बड़े–बड़े गट्ठर रखे थे। चाचा ने उसे बताया कि परसों इन गट्ठरों को होलिका में जलाया जायेगा। यह देखकर हरीश ने पूछा– ''लेकिन चाचा, यहाँ उपले तो हैं ही नहीं। फिर बिना उपलों के होली कैसे जलेगी।?''

''यहाँ शहर में उपले नहीं होते हैं बेटा! यहाँ परम्परा का निर्वाह करने के लिए गोबर से छोटे–छोटे छल्ले बनाए जाते हैं। फिर उन्हें रस्सी में पिरोकर छोटी–छोटी मालाएं बनाई जाती हैं। वही मालाएं होलिका में आखत डालते समय डाल दी जाती हैं।'' चाचा ने बताया।

''इतने बड़े शहर में तो बहुत–सी होलिकाएं जलती होंगी। उसमें तो न जाने कितने पेड़ काटकर जला दिए जाते होंगे?'' हरीश ने चाचा से पूछा।

''हाँ, बहुत सारी होलिकाएं जलती हैं और एक दिन में सैंकड़ों पेड़ों की लकड़ी होलिका में जल जाती हैं। लेकिन यह तो वर्षों से चला आ रहा है। यही परम्परा है।'' चाचा ने कहा।

चाचा की बात सुनकर हरीश को रास्ते में सड़क बनाने के लिए काटे जा रहे पेड़ों की याद आ गई। वह चाचा से बोला– ''लेकिन रास्ते में जो सड़क चौड़ी करने के लिए सैंकड़ों पेड़ सरकार ने कटवा दिए, वह तो पुरानी परम्परा नहीं थी। फिर भी हजारों पेड़ काट डाले गए। यदि पेड़ काटने ही थे तो पेड़ लगाने भी तो चाहिए थे सरकार को। सड़क बनाने की योजना एक दिन में तो पूरी नहीं होगी। वर्षों लग जायेंगे। जितने पेड़ काटे गए, यदि उतने ही लगाए भी जाते, तो कितना अच्छा होता? जब तक सड़क बनकर तैयार होती, तब तक पेड़ भी बड़े हो जाते ... और अब शहर में होलिका के नाम से सैंकड़ों

पेड़ कट जायेंगे। जितने कटेंगे, उतने लगेंगे नहीं। ऐसे तो एक दिन हमारी धरती बिना पेड़ों के हो जायेगी। जब पेड़ ही नहीं होंगे, तो जीवन कैसे चलेगा? तब तो कहीं सूखा और कहीं बाढ़ के प्रकोप से केवल विनाश ही विनाश होगा।''

हरीश की बातें चाचा बहुत ध्यान से सुन रहे थे। उसके तर्क बहुत ही सटीक और सही थे। उसके सवालों का उनके पास कोई जवाब नहीं था। कुछ पल रूककर हरीश ने कहा– ''चाचा जी, मेरे दिमाग में एक उपाय आ रहा है। यदि आप मेरा साथ दें तो हम इस होली को न केवल एक यादगार होली बना सकते हैं, वरन् होली में एक ऐसी परम्परा डाल सकते हैं, जो कभी भी धरती से पेड़ों को कम नहीं होने देगी।''

''ऐसा कौन–सा उपाय आया है तुम्हारे दिमाग में?'' चाचा ने उसकी ओर देखकर पूछा।

''इस होली पर जब हम होलिका दहन में पेड़ों की लकड़ियां जलाएंगे, तो हम एक पेड़ भी लगाएंगे। इस शहर में जितनी भी होलिकाएं जलती हैं, यदि उतने ही पेड़ हर होली के त्योहार पर लगा दिए जाएं तो निश्चय ही होली पर यह एक स्वस्थ और सुखद परम्परा तो होगी ही, साथ ही हमारी धरती पर कभी पेड़ों की कमी नहीं होगी।'' हरीश ने उपाय बताते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चाचा मुस्कुराते हुए बोले– ''तुम्हारा उपाय तो बहुत ही सुन्दर है। लेकिन यह जितना सुन्दर है, उतना उसे लागू करना कठिन है। परन्तु हम इसकी शुरुआत जरूर करेंगे और इस होली पर हम लोग एक पेड़ जरूर लगाएंगे और केवल इसी होली पर नहीं, बल्कि हर होली पर एक पेड़ लगाकर होली का त्योहार मनाएंगे।''

चाचा की बातें सुनकर हरीश को बहुत खुशी हुई। उसे इस बात की खुशी थी कि अब लोगों द्वारा इस परम्परा को हृदय से स्वीकार कर लेने से पेड़ों की लगातार हो रही कमी पर न केवल काबू पाया जा सकेगा, वरन हमारी धरती माता भी हम सबकी तरह होली के त्योहार का बेसब्री से इंतजार करेगी क्योंकि इसी त्योहार पर तो लोग नए पेड़ लगाकर उसका शृंगार करेंगे।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

एक चिड़ा पेड़ पर घोंसला बनाकर आराम से रहता था। एक दिन वह दाना–पानी के लिए अच्छी फसल वाले एक खेत में पहुँच गया। वहाँ खाने–पीने का काफी सामान देखकर वह बड़ा खुश हुआ। वह काफी दिनों तक वहीं खेत में दाना चुगता रहा। अपने घोंसले में नहीं आया।

एक दिन एक खरगोश उस पेड़ के पास आया जहाँ चिड़े का घोंसला था। पेड़ ऊँचा नहीं होने के कारण खरगोश उस पेड़ पर आसानी से घोंसले के पास पहुँच गया।

खरगोश ने देखा घोंसला खाली पड़ा है। घोंसला इतना बड़ा था कि खरगोश उसमें आराम से रह सकता था।

कुछ दिनों बाद वह चिड़ा दाना–पानी खा–पीकर मोटा–ताजा बनकर अपने घोंसले पर वापस लौटा। उसने देखा कि घोंसले में खरगोश आराम से बैठा हुआ है। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने खरगोश से कहा– बदमाश कहीं के, मैं नहीं था तो मेरे घर में घुस गये हो?

यह घर मेरा है, तुम निकलो यहाँ से।
खरगोश बोला– कहाँ का तुम्हारा घर? कौन सा तुम्हारा घर? यह घर तो अब मेरा है। अरे! कुआँ, तालाब या पेड़ एक बार छोड़कर कोई जाता है तो वह अपना हक भी गंवा देता है।

खरगोश की बात सुनकर चिड़ा कहने लगा– ऐसे बहस करने से कुछ हासिल होने वाला नहीं। चलो किसी समझदार और बुद्धिमान के पास चलते हैं। वह जिसके हक मैं फैसला सुनायेगा उसे यह घर मिल जायेगा।

उन्हें पेड़ से थोड़ी दूर एक धूर्त बिलाव एक पुस्तक पढ़ता नज़र आया। चिड़ा और खरगोश को वह समझदार और विद्वान लगा।

चिड़ा और खरगोश उस बिलाव के पास गए और उन्होंने अपनी समस्या बताई। वे बोले– जो भी सही हो उसे वह घोंसला मिल जाए और जो भी झूठा होगा उसे आप वह घर छोड़कर जाने को कहें।

खरगोश और चिड़े को देखकर बिलाव के मुँह में पानी भर आया। उसे भूख भी लगी थी। उसने सोचा– दोनों मोटे–ताजे हैं। कई दिनों तक भोजन की तलाश में भटकना नहीं पड़ेगा।

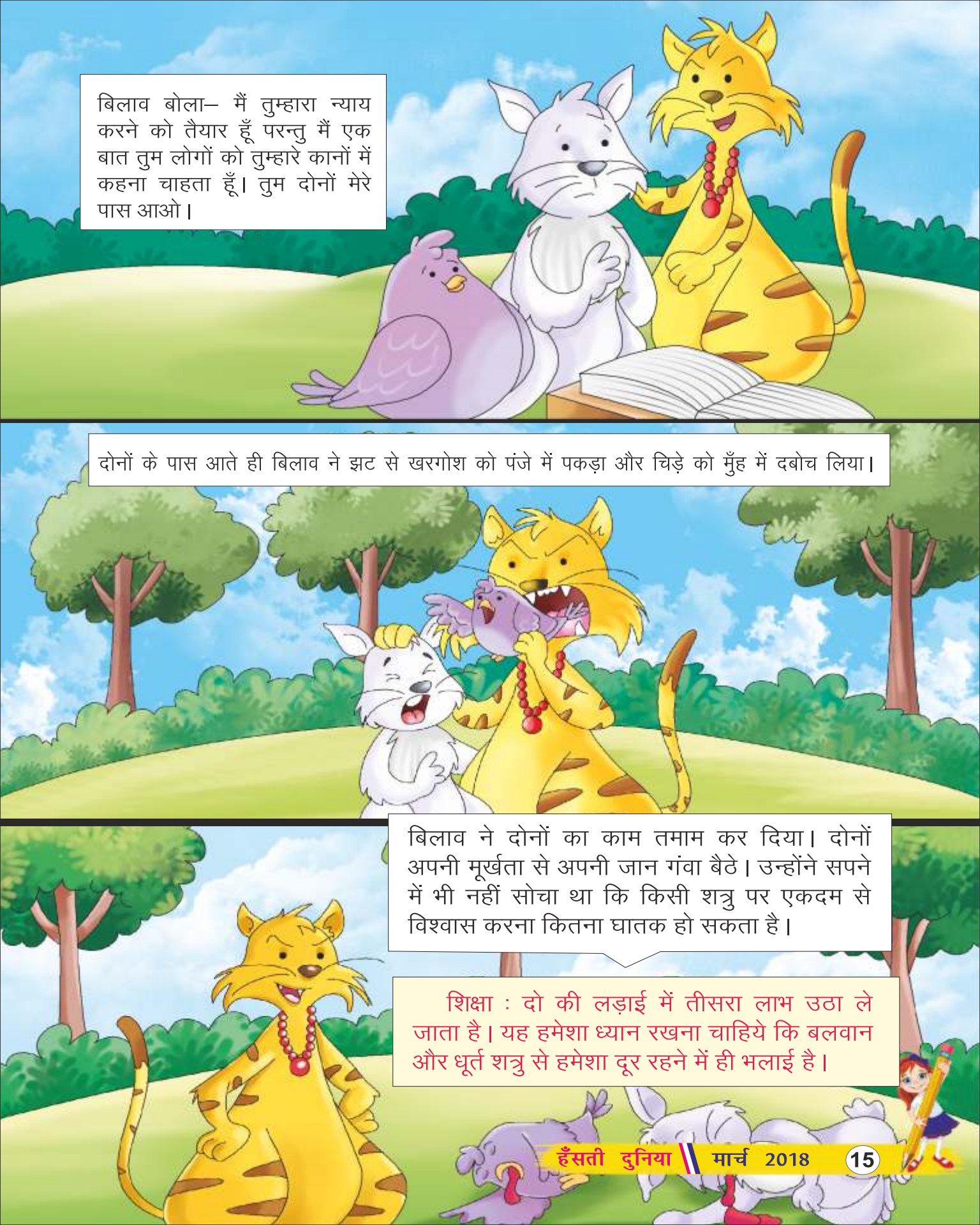

बिलाव बोला– मैं तुम्हारा न्याय करने को तैयार हूँ परन्तु मैं एक बात तुम लोगों को तुम्हारे कानों में कहना चाहता हूँ। तुम दोनों मेरे पास आओ।
दोनों के पास आते ही बिलाव ने झट से खरगोश को पंजे में पकड़ा और चिड़े को मुँह में दबोच लिया।
बिलाव ने दोनों का काम तमाम कर दिया। दोनों अपनी मूर्खता से अपनी जान गंवा बैठे। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि किसी शत्रु पर एकदम से विश्वास करना कितना घातक हो सकता है।
शिक्षा : दो की लड़ाई में तीसरा लाभ उठा ले जाता है। यह हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि बलवान और धूर्त शत्रु से हमेशा दूर रहने में ही भलाई है।

ब्रह्मांड 93 अरब प्रकाशवर्ष चौड़ा

आकाश अनंत है। इसका कोई ओर–छोर नहीं हैं। ये कितना बड़ा है इसका कोई ठोस अंदाजा अब से पहले तक नहीं था। मगर बरसों की मेहनत के बाद अब कुछ वैज्ञानिक ये दावा करने लगे हैं कि उन्होंने ब्रह्मांड को नाप लिया है। ताजा अनुमान कहते हैं कि ब्रह्मांड 93 अरब प्रकाशवर्ष चौड़ा है। (प्रकाशवर्ष वो पैमाना है जिससे हम लम्बी दूरियां नापते हैं। प्रकाश की रफ्तार बहुत तेज होती है। वो एक सेकेंड में करीब तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है। एक साल में प्रकाश जितनी दूरी तय करता है उसे पैमाना बनाकर दूरी को प्रकाशवर्ष में नापते हैं। इतनी लम्बी दूरी को किलोमीटर या मील में बताना बेहद मुश्किल है। इसीलिए प्रकाशवर्ष को पैमाना बनाया गया है।)

हम जिस धरती पर रहते हैं, वो सौरमंडल का हिस्सा है। हमारे सौरमंडल में नौ ग्रह हैं, जो सूरज का चक्कर लगाते हैं। सूरज एक तारा है, जो हमारी आकाशगंगा, 'मिल्की वे' का हिस्सा है। आकाशगंगा बहुत सारे तारों और उनका चक्कर लगाने वाले ग्रहों, उल्कापिंडों और धूमकेतुओं को मिलाकर बनती है। ब्रह्मांड में हमारी 'मिल्की वे' आकाशगंगा जैसी बहुत सी आकाशगंगाएं हैं।

ये कितनी हैं, इनका आकार कैसा है इस बारे में बरसों से वैज्ञानिक ठोस अंदाजा लगाने में जुटे हैं। इनकी पड़ताल से ही हमें अपने ब्रह्मांड के सही आकार का अंदाजा हो सकेगा। ताजा अनुमान कहते हैं कि हमारा ब्रह्मांड 93 अरब प्रकाश वर्ष बड़ा है और ये तेजी से फैल रहा है। इतने बड़े ब्रह्मांड में हमारी धरती कुछ वैसी ही है जैसे कि प्रशांत महासागर में पानी की एक बूंद।

नासा के वैज्ञानिक इस तरह समझाते हैं कि आप एक गुब्बारे में कुछ बिंदु बना दें। फिर उसमें हवा भरकर फुलाएं। हमारा ब्रह्मांड कुछ वैसे ही फैल रहा है और जो निशान आपने बनाएं हैं, वो हमारी 'मिल्की वे' जैसी आकाशगंगाएं हैं, जिनके बीच दूरी बढ़ती जा रही है। वैज्ञानिकों की पड़ताल के मुताबिक धरती से जो सबसे दूर सितारा है, वो करीब चौदह अरब साल पुराना है। यानी उसकी रोशनी को धरती तक पहुँचने में इतना वक्त लगा। इस वक्त ब्रह्मांड और फैल चुका है। तो इस आधार पर वैज्ञानिक कहते हैं कि आज वो तारा धरती से करीब 46.5 प्रकाश वर्ष दूर है। इस हिसाब से ब्रह्मांड आज 93 अरब प्रकाशवर्ष चौड़ा हो चुका है। (भाषा)

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

जम्मू-कश्मीर का राजकीय पशु

हांगुल

भारत के उत्तरी भाग के पर्वतीय जंगलों में हिरन परिवार के चार वन्य जीव पाये जाते हैं। ये हैं– सांभर, कांकड़, कस्तूरी मृग और हांगुल। इनमें से सांभर और कांकड़ अधिक ऊँचाई वाले भागों में नहीं रह सकते। ये केवल ढाई हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले स्थानों पर ही देखने को मिलते हैं। शेष दो हिरन कस्तूरी मृग और हांगुल अधिक ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में रहना पसन्द करते हैं।

हांगुल एक भारतीय हिरन है। इसे कश्मीरी स्टैग तथा कश्मीरी बारहसिंघा भी कहते हैं, किन्तु यह बारहसिंघा से पूरी तरह भिन्न है। हांगुल हिमालय पर्वत के 2400 मीटर से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है। किसी समय यह पूरे कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और हिमालय के पर्वतीय वनों में फैला हुआ था, किन्तु अब केवल कश्मीर के डाचीगाम और हिमाचल प्रदेश के उत्तरी चम्बा में ही सीमित रह गया है।

हांगुल प्रायः अकेले अथवा दो से लेकर अठारह तक के झुंड में नदियों के समीपवर्ती घने जंगलों अथवा चीड़ के सघन वनों में रहता है। इसे एक ही जंगल में रहना बिल्कुल पसन्द नहीं। यह एक शर्मीला हिरन है। अतः इसे स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने के लिये बहुत बड़ा क्षेत्र चाहिये। हांगुल भोजन की तलाश में एक जंगल से दूसरे जंगल और फिर इसी तरह अन्य जंगलों में घूमता रहता है। यह गर्मियों के दिनों में हिमालय पर्वत के ऊँचाई वाले भागों में चला जाता है और सर्दियों में अधिक ठंडक के कारण पुनः नीचे के घाटी वाले क्षेत्रों में उतर आता है।

हांगुल की शारीरिक संरचना सांभर के समान होती है। यह आकार में सांभर से कुछ छोटा होता है। हांगुल के शरीर की लम्बाई 125 सेंटीमीटर से लेकर 150 सेंटीमीटर तक, कंधों तक की ऊँचाई 120 सेंटीमीटर से 125 सेंटीमीटर तक एवं वजन 150 किलोग्राम से लेकर 225 किलोग्राम तक होता है। इसका रंग हल्के भूरे कत्थई रंग से लेकर गहरा कत्थई तक होता है तथा इस पर छोटे–छोटे मुलायम बाल होते हैं। हांगुल की दोनों तरफ की बगलों का भाग पीलापन लिये हुए हल्का भूरा होता है।

हांगुल के पैरों का रंग शरीर के रंग से कुछ हल्का होता है और ये काफी लम्बे व मजूबत होते हैं। अपने मजबूत पैरों के बल पर यह पर्वतीय क्षेत्रों की सीधी चढ़ाई भी दौड़ता हुआ चढ़ जाता है और थकता नहीं है। नर हांगुल के पिछले भाग पर लम्बे और घने बाल होते हैं तथा गर्दन के नीचे के भाग में छोटे–छोटे कम घने बाल होते हैं। हांगुल का मुँह लम्बा, कान बड़े तथा पूँछ छोटी होती है। इसके ओंठ, ठोढ़ी, कानों के भीतर का भाग, पेट तथा शरीर के नीचे का भाग आदि सफेदी लिये हुए हल्के भूरे रंग का होता है। हांगुल के शरीर का रंग गर्मियों में हल्का पड़ जाता है तथा सर्दियों में पुनः गहरा हो जाता है, किन्तु वृद्ध नर स्थायी रूप से गहरे रंग के हो जाते हैं।

मादा हांगुल का शरीर नर से छोटा होता है तथा रंग मटमैला पीलापन लिये हुए भूरा सा होता है। कभी–कभी वृद्ध मादाओं के शरीर पर सफेद रंग की चित्तियां उभर आती हैं, जो जीवनभर बनी रहती हैं।

नर हांगुल के सर पर सामान्य हिरनों के समान दो मृगशृंग (एन्टलर्स) होते हैं, जिनकी लम्बाई 100 सेंटीमीटर से लेकर 110 सेंटीमीटर तक होती है। हांगुल के अधिकतम लम्बे मृगशृंगों का कीर्तिमान 128.3 सेंटीमीटर है। इसके प्रत्येक मृगशृंग में 5 अथवा 6 शाखाएं होती हैं, जिनके सिरे पतले और नुकीले होते हैं। हांगुल के मृगशृंगों की शाखाओं की कुल संख्या 10 से 13 तक हो सकती है किन्तु कभी–कभी 14–15 शाखाओं वाले मृगशृंग भी अपवाद के रूप में देखने को मिल जाते हैं। हांगुल के मृगशृंगों की शाखाओं का कीर्तिमान 16 है, किन्तु सोलह शाखाओं वाले मृगशृंगों का हांगुल अभी तक केवल एक ही देखा गया है। नर हांगुल के मृगशृंग मार्च–अप्रैल तक गिर जाते हैं। इसके बाद यह ऊँचे पर्वतीय वनों की ओर चल देता है। इसके मृगशृंग अगस्त में पुनः निकलना आरम्भ होते हैं और अक्टूबर तक पूरे निकल आते हैं।

हांगुल दिवाचर है अर्थात दिन के समय चरता है। यह प्रातःकाल सूर्योदय होते ही भोजन की तलाश में निकल पड़ता है और सूर्यास्त के बाद अंधेरा होने तक चरता है तथा रात्रि के समय किसी सुरक्षित स्थान पर विश्राम करता है। हांगुल को तेज धूप या गर्मी सहन नहीं होती। अतः गर्मी के दिनों में तेज धूप होने पर यह किसी छायादार वृक्ष के नीचे आराम करता है और धूप की तेजी समाप्त होने पर पुनः चरने के लिये निकल पड़ता है।

हांगुल सदैव झुंड में रहने वाला हिरन है। यह हमेशा झुंड में ही चरता है किन्तु इसके झुंड में सदस्यों की संख्या मौसम पर निर्भर करती है। हांगुल का प्रमुख भोजन घास–फूस, पत्तियां तथा पर्वतीय वनों में उगने वाली विभिन्न प्रकार की झाड़ियां आदि हैं। यह कभी भी एक जंगल में रहकर नहीं चरता, बल्कि भोजन की तलाश में एक जंगल से दूसरे जंगल और इसी प्रकार तीसरे–चौथे जंगल में घूमता–फिरता है।

हांगुल के झुंड में प्रायः दो से लेकर अठारह तक सदस्य रहते हैं। हांगुल के झुंड में प्रायः एक या दो नर, अनेक मादाएं तथा इनके बच्चे होते हैं। मार्च–अप्रैल के महीनों में तेज गर्मी होने पर भोजन की कमी के कारण हांगुल के झुंड टूट जाते हैं।

हांगुल की दृष्टि सामान्य होती है किन्तु घ्राण शक्ति और श्रवण शक्ति बड़ी तेज होती है। इसके चार प्रमुख शत्रु हैं– हिमालय का भूरा भालू, हिमालय का काला भालू, हिम तेंदुआ तथा तेंदुआ। इनमें तेंदुआ सबसे अधिक खतरनाक होता है। इसकी गंध पाते ही हांगुल सतर्क हो जाता है और मुँह से एक विचित्र प्रकार की आवाज निकाल कर अपने साथियों को भी सावधान कर देता है।

बाल कविता : अर्जुन क्वात्रा

दिल से मनाओ होली

क्या दोस्त, क्या दुश्मन,
भुलाकर सब वैर–भाव।
मिलकर सबके गले,
हँसते–खेलते मनाओ होली।।

गिराकर सब दीवारें,
नफरत और वैमनस्य की।
जलाकर सभी बुराईयां,
प्रेम–भाव से मनाओ होली।।

रंगों जैसे मिल जाये,
सबके मन को भा जाये।
प्रेम रंग में रंगकर,
सब दिल से मनाओ होली।।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

सबको गले लगाती

ढोल मजीरा खूब बजाती
धूम मचाती होली आई,
होली का हुड़दंग मचाती
मस्तानों की टोली आई।

नीले, पीले, हरे, गुलाबी
सब रंगों की झोली लाई।
सबको गले लगाती जाती
मीठी–मीठी बोली भाई।

जानकारी : किरण बाला

पानी से बनेगा डीजल

कार चलाने के लिए महंगे डीजल की आवश्यकता होती है। इसके दाम भी बढ़ते रहते हैं। ऐसे में आप सोचते होंगे कि काश! कार डीजल की बजाय पानी से चलती तो कितना अच्छा होता। वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक विकसित कर ली है जिसमें पानी से डीजल बनाया जा सकेगा और इस डीजल से आपकी कार फर्राटे से सड़कों पर दौड़ेगी।

कार बनाने वाली जर्मन कम्पनी ऑडी ने अब पानी से ही डीजल बनाना शुरू कर दिया है। इस डीजल को कम्पनी ने 'ऑडी ई–डीजल' नाम दिया है जिसे कारों में ईंधन के रूप में काम में लिया जा सकता है। ऑडी ई–डीजल में सल्फर और एयरोमेटिक हाइड्रोकार्बन जैसे तत्व नहीं हैं जिससे पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।

ऑडी ने ई–डीजल बनाने का काम जर्मनी के ड्रेस्डेन स्थित अपने प्लांट में शुरू किया है। इस प्लांट में लिक्विड ईंधन बनाने के लिए ग्रीन पावर का इस्तेमाल किया जा रहा है जिसमें पानी, हवा और कार्बन डाईऑक्साइड शामिल हैं। प्लांट में कार्बन डाईऑक्साइड बायोगैस प्रक्रिया के माध्यम से ली जा रही है।

पानी को एक टैंक में गर्म कर उसे भाप के रूप में बदला जाता है जिससे वह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के रूप में अलग हो जाता है। हाइड्रोजन को कार्बन डाईऑक्साइड के एक गर्म टैंक में से होकर गुजारा जाता है। इससे निकलने वाला पदार्थ लिक्विड (तरल) रूप में मिलता है, जिसे दूसरे टैंक में इकट्ठा किया जाता है। ये ब्लू क्रूड होता है। ब्लू क्रूड को फिल्टर कर पेट्रोल–पम्प में डाल दिया जाता है जिसे ईंधन के रूप में काम में लिया जाता है।

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi-110009

2. Periodicity of Publication :
   Monthly

3. Printer's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi-110001

4. Publisher's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi- 110001

5. Editor's Name :
   Vimlesh Ahuja
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   H.No. 1/43,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

6. Name and Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.
   Sant Nirankari Mandal,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

I, Radhey Shyam, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 1.3.2018

Radhey Shyam
Publisher

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

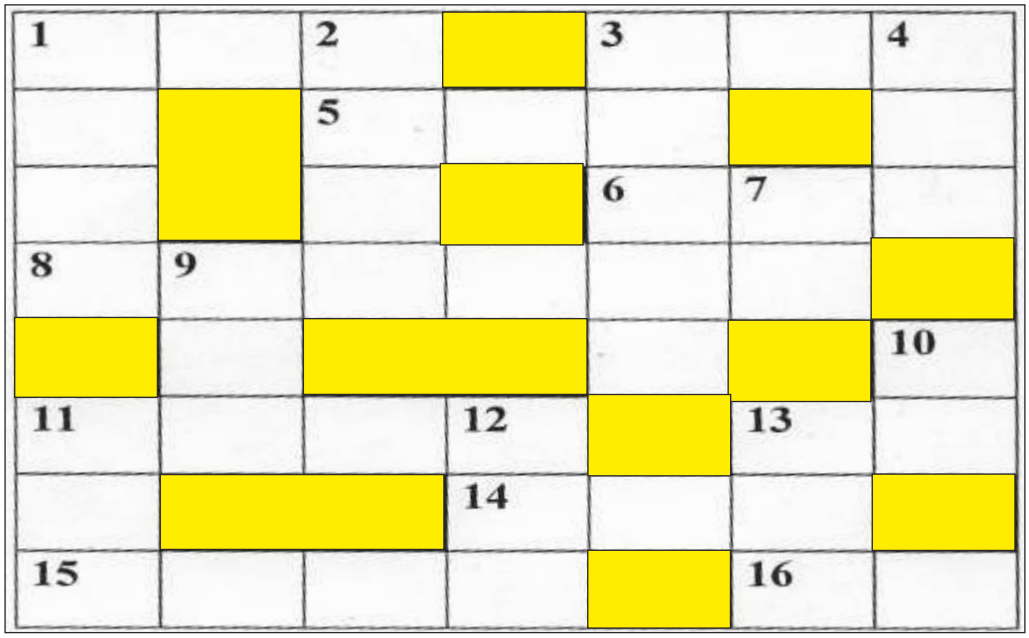

बाएं से दाएं

1. शुद्ध शब्द छांटिए : मन्दिर / मन्दीर।
3. मुगल बादशाह शाहजहाँ के बचपन का नाम (बाबर / खुर्रम)।
5. स्वदेश का विपरीत शब्द।
6. साठ सैकेण्ड यानि एक ..... ।
8. एक लाख दस हजार का पाँचवां हिस्सा।
11. एडिसन और मारकोनी में से जिसने वायरलैस का आविष्कार किया।
13. 'विश्व मानव अधिकार' दिवस दिसम्बर महीने की .... तारीख को मनाया जाता है।
14. विटामिन 'ए' की कमी से होने वाला एक रोग जिसमें रात को कम दिखाई देता है।
15. इस पंक्ति में छुपा शेर का एक पर्यायवाची शब्द ढूंढिए : रामजीवन राजकुमार का मित्र है।
16. चिली और चीन में से जो देश दक्षिणी अमरीका महाद्वीप में स्थित है।

ऊपर से नीचे

1. जम्मू और कश्मीर की पहली महिला मुख्यमंत्री का नाम .... मुफ्ती है।
2. मीरा के समकालीन एक प्रसिद्ध सन्त।
3. बेमेल शब्द छांटिए : हैदराबाद, खुशमिजाज, खड़गपुर, पोरबंदर।
4. ओमान देश की राजधानी।
7. नारी का पुल्लिंग।
9. ईसा मसीह जी के पुनः जीवित होने से सम्बन्धित जो त्योहार मनाया जाता है।
10. जिस देश की राजधानी पेरिस है।
11. मानव का जन्म 1998 में हुआ था। अंकुर मानव से छः साल छोटा है। अगर दोनों भारत के नागरिक हैं तो लोकसभा चुनाव में पहले मतदान करने का अधिकार किसे प्राप्त होगा?
12. नीरज और सूरज में से जो कमल का एक पर्यायवाची शब्द है।
13. परोपकार के लिए अपनी हड्डियां दान करने वाले ऋषि का नाम।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

प्रेरक कथा : फेनम सोगानी

जोसेफ का दृढ़ संकल्प...

जर्मनी में ''जोसेफ बर्नार्ड'' नाम का एक बुद्धिहीन बालक था। वह घर के किसी सदस्य का कुछ कहा न मानता और अपनी मर्जी अनुसार ही कार्य किया करता। कभी घर में तोड़–फोड़ करता तो कभी पड़ोस में जाकर बच्चों को मारता, पौधों को उखाड़ देता, जानवरों के बीच जाकर बैठ जाया करता, कई बार तो वह अपने कपड़े फाड़ दिया करता, मिट्टी में खूब खेला करता। जब घर आता तो खाने–पीने की चीजें भी फेंक दिया करता।

जोसेफ की हरकतों से सारे घर वाले ही नहीं मोहल्ले के लोग भी परेशान थे। एक दिन उसके पिता ने मन में कुछ सोचा और उसी के मुताबिक जोसेफ को एक अच्छी ट्यूशन लगवाई। लेकिन 8–10 महीनों में भी कोई सार्थक परिणाम नहीं निकला। जोसेफ अपनी हरकतों से बाज नहीं आया।

एक दिन पिता ने नाराज होकर कहा– ''बेटा जोसेफ, तुम्हें मैं एक खरी और सच्ची बात कह रहा हूँ। तुम्हारे जैसी बुद्धू औलाद से तो कुत्ते का बच्चा पालना अच्छा था...।''

यूं तो जोसेफ बुद्धिहीन था, लेकिन यह बात सुनते ही उसका मस्तिष्क झनझना उठा। उसके दिल में यह बात नुकीले तीर की तरह चुभ गई। उसकी आँखों में आंसू भर आये।

दूसरे दिन जब मास्टर जी उसे ट्यूशन पढ़ाने आये तो उसने पूर्ण मनोयोग और लगन से मास्टर जी की बताई बातों पर गम्भीरता से ध्यान दिया। वह धीरे–धीरे पढ़ाई में रूचि लेने लगा, जिससे चमत्कारी परिणाम सामने आए और वह कुछ सालों की मेहनत के उपरांत अत्यधिक मेधावी बना।

जोसेफ ने बाइबिल कंठस्थ कर ली और कुछ ही वर्षों में वह एक दर्जन से भी अधिक भाषाओं का मूर्धन्य विद्वान बन गया। अपने विभाग के नौ अधिकारियों को एक साथ बैठाकर कितने ही आदेश वह एक साथ लिखा देता और असंख्य सेवा कार्यों को अंजाम देता। उसे लोग चमत्कारी पुरुष मानने लगे।

जर्मनी के इतिहास में जोसेफ बर्नार्ड को मेधा का धनी माना जाता है।

साथियों! यह बात सौ फीसदी सच है– ''संकल्पित होकर लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास व्यक्ति के जीवन में असाधारण परिवर्तन ला देते हैं।''

अपनाने योग्य बातें

★ पढ़ने में मन लगाओ। विद्या प्राप्ति के लिए पूरा यत्न करो।
★ केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए मत पढ़ो; ज्ञान की वृद्धि के लिए पूरी पढ़ाई करो।
★ ऐसा कोई काम मत करो जो अध्ययन में बाधा दे।
★ जो कुछ ज्ञानार्जन कर लोगे, वही जीवन में सफलता तथा सम्मान देगा।

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

पायलट बनूंगा

जब भी अंकित से कोई पूछता कि वह बड़ा होकर क्या बनेगा तो वह कोई निश्चित जवाब नहीं दे पाता। कभी वह कहता कि इंजीनियर बनूंगा तो कभी डॉक्टर।

दरअसल उसे भी ठीक–ठीक नहीं मालूम था कि वह क्या बनना चाहता है। वह अभी छोटा ही तो था, केवल 11 साल का। वह कक्षा 6 में पढ़ता था।

एक दिन जब वह स्कूल से लौट कर आया तो उसने अपनी मम्मी–पापा को बहुत खुश पाया।

–क्या बात है, मम्मी, आप जोर से हँस रहे हैं।– उसने मम्मी से पूछा।

–हाँ बेटे, हम लोग अगले महीने अमेरिका जा रहे हैं। तुम्हारे लोकेश भइया की शादी है।

सुनकर वह भी खुशी से उछल पड़ा। लोकेश उसके ताऊजी के लड़के का नाम था। उसके ताऊजी अमेरिका में रहते थे। वे वहाँ किसी संस्था में वैज्ञानिक थे।

पापा उसी दिन से पासपोर्ट और वीजा बनवाने में जुट गये।

–पापा, ये पासपोर्ट और वीजा क्या होता है?– एक दिन अंकित ने पूछा।

–बेटा, यह विदेश में घुसने का अनुमति–पत्र होता है। जिससे कि कोई भी गलत आदमी विदेश न पहुँच जाए। ये विदेश जाने वाले व्यक्ति की अच्छी तरह से जांच–पड़ताल के बाद ही बनता है।

आखिर वह दिन भी आ गया जब अंकित अपने मम्मी–पापा के साथ हवाईजहाज में बैठा। वह बहुत खुश था।

–पापा, इतना बड़ा हवाईजहाज हवा में उड़ता कैसे है?– हवाईजहाज को आश्चर्य से देखते हुए उसने पूछा।

–बेटा, इसके उड़ने में एक खास नियम काम करता है। जब हम पानी या हवा को नीचे की ओर धक्का देते हैं तो वह भी हमें ऊपर की ओर धकेलता है। इसी तरह जब हवाईजहाज का पंखा हवा को बड़े जोर से नीचे की तरफ फेंकता है, तो हवा भी उसे ऊपर की ओर धक्का लगाती है। जब हवाईजहाज ऊपर उठता है तो इसके बड़े–बड़े पंख इसे हवा में सम्भालने का कार्य करते हैं। इसमें लगा इंजन इसे आगे बढ़ाने में मदद करता है। इस प्रकार हवाईजहाज आकाश में तेजी से उड़ने लगता है।– अंकित के पापा ने बताया।

इसी बीच विमान परिचारिका मुस्कुराते हुए उनके पास आई और यात्रियों से अपनी–अपनी कमर–बेल्ट बांध लेने का अनुरोध करने लगी क्योंकि अब हवाईजहाज उड़ान भरने वाला था।

—पापा, इस बेल्ट को बांधने से क्या फायदा है?— बेल्ट कसते हुए अंकित बोला।

—इससे विमान के उड़ते समय हमको झटका नहीं लगता है, वरना हम गिर भी सकते हैं।

—तो क्या यह बेल्ट हमें सारे सफर में बांधनी पड़ेगी?

—नहीं, केवल हवाईजहाज के ऊपर उठते और नीचे उतरते समय। जब विमान ऊपर उड़ रहा हो तब हम इसे खोल सकते हैं।

—पापा, इस हवाईजहाज को चलाने वाला ड्राइवर नहीं दिख रहा है।— अंकित ने इधर–उधर देखते हुए कहा।

—बेटा, वह आगे बने केबिन में बैठा है। उसके बैठने के स्थान को काकपिट कहते हैं और हवाईजहाज उड़ाने वाले ड्राइवर को पायलट कहते हैं। काकपिट में अनेक तरह के यंत्र लगे रहते हैं। जिससे पायलट अपने हवाईजहाज को नियंत्रण में रखता है।— अंकित के पापा ने उसे समझाया।

—पापा, यदि उड़ान भरने के बाद हवाईजहाज में कोई खराबी आ जाए तब पायलट क्या करता है?

—बेटा, ऐसा कम ही होता है, क्योंकि उड़ान भरने से पहले हवाईजहाज को पूरी तरह से चैक किया जाता है। फिर भी यदि उड़ान भरने के बाद हवाईजहाज में कोई कमी आ जाती है तो पायलट उसे सावधानीपूर्वक किसी सुरक्षित स्थान पर उतारने की कोशिश करता है।

—यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो?

—तो उसके निर्देश से हवाईजहाज के कर्मचारी पैराशूट द्वारा यात्रियों को नीचे उतारने में मदद करते हैं।

—ये पैराशूट क्या है पापा?

—यह बहुत बड़े विशेष कपड़े तथा रस्सियों का बना छाता है। हवाईजहाज से नीचे कूदने पर ये खुल जाता है व व्यक्ति को धीरे–धीरे नीचे लाता है। इस प्रकार व्यक्ति एकदम से नीचे नहीं गिरता।

—इसके लिए क्या हमें पैराशूट लेकर हवाईजहाज के दरवाजे से कूदना पड़ता है।

—नहीं, इसकी व्यवस्था हवाईजहाज के परों से होकर होती है।

—अच्छा पापा, यदि मैं बड़ा होकर पायलट बनूं तो कैसा रहे?— कुछ सोचते हुए अंकित ने कहा।

—हाँ बहुत अच्छा रहेगा। परन्तु इसके लिए तुम्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।— उसके पापा ने कहा।

—साथ में उसकी मम्मी और विमान परिचारिका भी मुस्कुरा रही थी। वह उन्हें कोल्ड ड्रिंक सर्व करने आई थी। ●

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल
विश्व जल दिवस (22 मार्च) पर विशेष

जल महिमा

जल ही जीवन जीव जगत का,
बच्चों पक्का मानों।
जल की महिमा बड़ी निराली,
इसको तुम पहचानो।।

रोज सवेरे मंजन करते,
इसके बाद नहाते।
जल से ही खाना बनता है,
सुबह शाम जो खाते।।

जल से अपने मैले कपड़े,
रगड़–रगड़ हम धोते।
जल पीकर के घोड़े खच्चर,
बोझ हमारा ढोते।।

वर्षा जल से खेती होती,
पेड़ हरे हो जाते।
मानव के संग जीव जन्तु भी,
नई जिन्दगी पाते।।

जल औषधि है सब रोगों की,
दादा जी बतलाते।
नियमित प्रातः जल पीने से,
रोग दूर हो जाते।।

जल से जंगल जीव–जन्तु सब,
जल से सागर नदियां।
मानव का इन सबसे नाता,
देख चुकी हैं सदियां।।

लेकिन मानव नादानी में,
जल को खूब बहाता।
और प्रदूषित करके इसको,
अपनी मौत बुलाता।।

जल बिन जीवन नहीं रहेगा,
जल की महिमा जानो।
आज अभी से जल संरक्षण,
करने की तुम ठानो।

जानकारीपूर्ण लेख : डॉ. विनोद गुप्ता

जानवर अपने घर का रास्ता कभी नहीं भूलते

प्रकृति ने धरती पर इंसान के अलावा तरह–तरह के जानवर भी पैदा किए हैं, जिनके पास न तो इंसानों जैसा दिमाग है, न ही समझ और न ही उनकी अपनी कोई भाषा। इन सबके बावजूद उनमें एक विलक्षणता है। वह यह है कि वे अपने घर का रास्ता कभी नहीं भूलते। उन्हें चाहे जितनी दूर ले जाकर छोड़ दो, वे वापस वहीं लौट आएंगे जहाँ से वे गए थे। आखिर क्या है उनकी विलक्षणता का राज?

जानवर दो प्रकार के होते हैं जंगली और पालतू। जो जानवर जंगलों में रहते हैं, उनका भी अपना रहने का एक ठिकाना यानी घर होता है, जहाँ वे आकर विश्राम करते हैं। इसी प्रकार, जो जानवर पालतू होते हैं, उन्हें भले ही आप खुला छोड़ दें, वे शाम होते ही अपने मालिक के घर लौट आते हैं। आखिर क्यों नहीं भूलते जानवर अपने घर का रास्ता?

पक्षियों में भी यह गुण होता है कि वे अंधेरा होने पर अपने सुरक्षित स्थान पर लौट आते हैं। कभी रास्ता नहीं भटकते। भले ही आप उन्हें पकड़कर कितनी ही दूर छोड़ आएं वे वापस अपने मूल स्थान पर लौट आते हैं।

यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि किसान या पशुपालक अपने पशुओं खासतौर पर गाय, भैंस, बकरी आदि को चरने के लिए खुला छोड़ देते हैं। ये मवेशी निर्धारित समय पर अपने बाड़े या घर में लौटकर आ जाते हैं। इन्हें रास्ता बताने की जरूरत नहीं पड़ती।

पालतू कुत्ते, बिल्ली, खरगोश भी अपने मालिक के घर और उसका रास्ता बखूबी पहचानते हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि आपका कुत्ता या बिल्ली रास्ता भटक गया हो। कुछ समय पूर्व अमेरिका का एक डॉगी इसलिए चर्चित रहा कि उसकी मालकिन ने उसे दूसरे शेल्टर होम में भेज दिया था, लेकिन डॉगी 17 किलोमीटर दूर से भागकर वापस उनके पास आ गया। जब उसे अन्यत्र ले जाया गया था तो वह कार में सवार था और पहले कभी उस रास्ते पर वह नहीं गया था।

आखिर जानवरों में ऐसी कौनसी शक्ति होती है, जो वे भाषा, मेप, जीपीएस या नेविगेशन सिस्टम के बिना भी रास्ता याद रखते हैं। खासकर अपने घर का।

अब से कोई दो साल पहले तो एक बिल्ली 320 किलोमीटर का लम्बा सफर तय करके अपने मालिक के पास पहुँची। हालांकि उसे इतनी दूरी तय करने में दो महीने का समय लगा।

जानवरों की इस विलक्षण क्षमता को लेकर वैज्ञानिकों ने अनेक शोध किए हैं, लेकिन फिर भी यह अनसुलझी गुत्थी है। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि जानवरों का 'नेचुरल मेप'

उनकी प्रजाति पर निर्भर करता है। जैसे समुद्री पक्षी अपना रास्ता सूरज और तारों के हिसाब से तय करते हैं।

कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि जानवर मैगनेटिक फील्ड के हिसाब से अपना रास्ता तय करते हैं। वे पृथ्वी की मैगनेटिक फिल्ड्स नार्थ–साउथ लाइंस के हिसाब से नेविगेट करने लगते हैं। छोटे कछुओं पर हुए एक अध्ययन में यह साबित भी हो चुका है।

कबूतर भी ऐसे ही नेविगेट (मार्गनिर्देशन) करते हैं। माना जाता है कि उनकी चोंच में कुछ ऐसी कोशिकाएं होती हैं जिनमें आयरन (लोहा) की मात्रा अधिक होती है। इससे उनको मार्गनिर्देशन करने में मदद मिलती है।

स्तनधारी जानवर, खासकर कुत्ते–बिल्ली कई तरह के नेविगेट करने की क्षमता रखते हैं। जैसे कुत्तों में सूंघने की क्षमता ही इतनी होती है कि वे आसानी से रास्ता पहचान लेते हैं किसी कुत्ते के लिए 15–20 किलोमीटर लम्बा रास्ता याद रखना कोई बड़ी बात नहीं है। वो खुद अपनी ही गंध का पीछा करते हुए वापस आ सकते हैं।

बिल्ली भी मैगनेटिक फील्ड के हिसाब से चलती है। कई अध्ययन में यह साबित भी हुआ है कि स्तनधारी जानवरों के कान में आयरन होता है। इसी की मदद से ये जानवर चुंबकीय क्षेत्र के हिसाब से रास्ता तय करते हैं।

कहानी : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

अहंकार का आवरण

एक गाँव में एक मूर्तिकार रहता था। वह मिट्टी की अति सुन्दर मूर्तियां बनाता, जो भी लोग उन मूर्तियों को देखते वाह–वाह कर उठते। उसके हाथ के कौशल एवं प्रवीणता, क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई थी। मूर्तिकार की मूर्तियां अच्छी कीमत पर बिकती थीं। परिवार का भरण–पोषण ठीक प्रकार से चल जाता था।

उस मूर्तिकार के एक पुत्र था। मूर्तिकार पिता उसे भी अपनी उसी कला में प्रवीण बनाना चाहता था। अतएव पुत्र को भी सिखाना शुरू कर दिया। पुत्र ने भी उस मूर्ति बनाने की कला में अभिरूचि दिखाई, वह उसकी बारीकियों को समझने तथा उत्साहपूर्वक उस अभ्यास में मग्न रहने लगा।

पुत्र कुछ और बड़ा हुआ तो उसे अपने कार्य में अच्छी सफलता मिलने लगी। यहाँ तक कि उसकी मूर्तियां पिता की तुलना में ज्यादा कीमत में लोग खरीदने लगे। यह उचित भी था, एक तो सीखने की चेष्टा, दूसरे पुत्र की जन्मजात प्रतिभा क्रमानुसार निखार ला रही थी, पुत्र की प्रसिद्धि बढ़ती चली गई।

पुत्र रोज अपनी मूर्तियों को बनाकर पिता को दिखाता और फिर उसमें गुण–दोष की चर्चा करता। उनकी विक्रय राशि दिखाता व पिता से प्रशंसा की पूर्ण अपेक्षा रखता। पिता उसकी लगन की प्रशंसा तो करते, पर साथ में जो कमी होती उसका निवारण भी बताते।

अब रोज ही अपनी कमियां सुनने पर पुत्र को बुरा लगने लगा। आखिर में एक दिन झुंझलाकर उसे मूर्तिकार पिता से कह ही दिया, ''पिताजी! मैं इतनी कोशिश करता हूँ, पर आप कुछ न कुछ कमी निकाल देते हैं। मेरी बनाई मूर्तियां आपकी मूर्तियों से भी मुझे

ज्यादा कीमत देती हैं। फिर भी आप उसमें दोष क्यों निकालते हैं? हमको इसका कारण नहीं समझ में आ रहा, कभी तो अच्छाई भी देखें।''

यह सुनकर पिता को बहुत दुःख हुआ। वह चुप ही रहा। जब पुत्र बाजार चला तब भी वह दुःखी मन से लेटा रहा और भोजन भी नहीं किया।

पुत्र जब बाजार से लौटा तो उसे दुःखी पिता के बारे में सूचना मिली। पुत्र को अपने किए पर पछतावा हुआ कि उसने अपने पिता की बात का बुरा क्यों माना और बदले में तिरस्कार क्यों किया? पुत्र अपने दुःखी पिता से क्षमा मांगने गया और भोजन करने का अनुरोध किया।

मूर्तिकार पिता ने दुःखी मन से कहा, ''प्रश्न यह नहीं है कि तुमने क्या कहा और मुझे कैसा लगा? सच बात तो यह है कि यदि तुम हमारी समीक्षा का बुरा मानोगे तो तुम्हारी मूर्तियों में जो थोड़ी बहुत कमी थी, तुम्हारी और प्रसिद्धि होने तथा अधिक मूल्य और सुधार की जो सम्भावना थी, वह समाप्त हो जायेगी। समीक्षा ही सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है, यदि वह बन्द हो गई तो प्रगति का पथ भी रूक जाता है।''

मूर्तिकार पिता की बात उचित थी। अहंकार के आने पर अथवा सम्पूर्ण पूर्णता की अनुभूति होने पर मनुष्य अपने दोष ढूंढना तो दूर उन्हें बताने पर विपरीत क्रोधी हो जाता है, फलस्वरूप उसकी प्रगति वहीं पर रूक जाती है।

पुत्र ने वास्तविकता को जाना और रोज अपनी मूर्ति निर्माण में पिता से ही नहीं, परिचितों और ग्राहकों से भी विनम्र भाव से पूछने लगा। गलती पूछने तथा सुधारने के क्रम ने उसे अपनी कला क्षेत्र का सर्वोत्तम मूर्तिकार बना दिया।

प्रगति जिस किसी क्षेत्र में, जिसे भी अभीष्ट हो, यही एक मात्र राजमार्ग है। चाहे आत्मसमीक्षा की जाए अथवा मार्गदर्शन मांगा जाए। प्रत्येक दृष्टि से यह रीति–नीति दूरदर्शितापूर्ण सिद्ध होती है।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

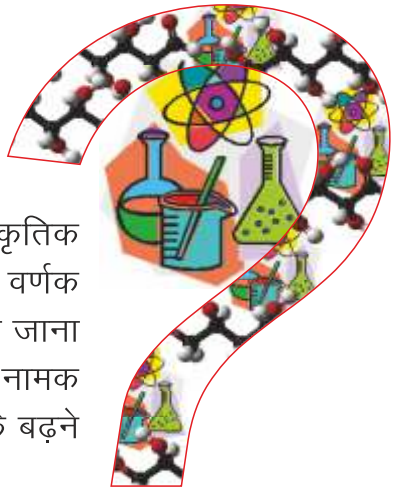

प्रश्न : आयु के बढ़ने के साथ–साथ बाल सफेद क्यों हो जाते हैं?

उत्तर : समय के साथ बालों का पकना अथवा सफेद होना एक प्राकृतिक (Natural) प्रक्रिया है। दरअसल, बालों का कालापन एक प्रकार के वर्णक (Pigment) के कारण सम्भव हो पाता है जिसे 'मेलेनिन' के नाम से जाना जाता है। जैसे–जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, यह मेलेनिन नामक वर्णक कम बनने लगता है। परिणाम यह निकलता है कि आयु के बढ़ने के साथ–साथ बाल सफेद हो जाते हैं।

प्रश्न : प्याज को काटने पर आँखों से आंसू क्यों निकलते हैं?

उत्तर : दरअसल, प्याज को काटने पर इसमें से प्रोपेनथिऑल सल्फर ऑक्साइड निकलता है जो प्याज में मौजूद एंजाइम के साथ मिलकर एक सल्फर यौगिक बनाता है। यह गैस जब तुम्हारी आँखों से होकर गुजरती है तो आंसू के साथ मिलकर सल्फ्यूरिक एसिड (H_2SO_4) बनाती है। इसी अम्ल (Acid) के कारण तुम्हारी आँखों से आंसू निकलने लगते हैं। प्याज को पानी में भिगोकर अथवा उबालकर काटने से परेशानी से बचा जा सकता है।

प्रश्न : मधुमक्खियों के पंख 'फड़फड़' की आवाज क्यों करते हैं?

उत्तर : दरअसल, उड़ने का काम पंख ही करते हैं। मधुमक्खियां भी पंखों की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़कर पहुँचती हैं। उड़ते समय इनके पंखों में 'फड़फड़' की आवाज आना स्वाभाविक है। इसका कारण यह है कि उड़ते समय इनके पंखों की मांसपेशियां एवं शरीर का मध्य भाग (Thorax) आपस में टकराते हैं। नतीजा यह निकलता है कि 'फड़फड़' की ध्वनि उत्पन्न होती है।

प्रश्न : गेहूँ की रोटी क्यों फूलती है?

उत्तर : तवे पर डालने से गेहूँ की रोटी फूल जाती है जबकि बाजरा और मक्का की रोटी नहीं फूलती। दरअसल, सूखे आटे में पानी डालकर जब उसे भली–भांति गूंथा जाता है तो गेहूँ में मौजूद प्रोटीन की एक लचीली परत बन जाती है जिसे लासा या ग्लूटेन कहते हैं। यह परत कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) गैस को अपने अन्दर अवशोषित कर लेती है। जब गूंथे हुए आटे की रोटी बेलकर तवे पर डाली जाती है तो पहले से विद्यमान कार्बन डाईऑक्साइड गैस के फैलने के कारण गेहूँ की रोटी फैलने लगती है और आहिस्ता–आहिस्ता करके वह फूल जाती है। गेहूँ की भांति बाजरा एवं मक्का में लासा की मात्रा नहीं होती। जिससे इनकी बनी रोटियां तवे पर डालने से नहीं फूलती।

रहस्यों के घेरे में बरमूदा का त्रिकोण

लेख : दीपांशु जैन

आज भी पृथ्वी पर कुछ ऐसे रहस्य हैं, जिन पर से पर्दा नहीं हटा है। ऐसा ही एक अनसुलझा रहस्य है 'बरमूदा त्रिकोण'। उत्तर अमेरिका के दक्षिण–पूर्व तट के पास पश्चिम अंध महासागर का एक हिस्सा है, जो बरमूदा से लेकर फ्लोरिडा तक तथा पूर्व में बहाया और पोर्टो रिकों से लगभग 40 डिग्री पश्चिम देशांतर तक फैला हुआ है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र आज भी सबसे विवादास्पद, अविश्वसनीय और रहस्यमय घटनाओं का केन्द्र है। यह सागरीय क्षेत्र 'बरमूदा त्रिकोण' के नाम से प्रसिद्ध है।

इस क्षेत्र में 1945 से अब तक 100 से अधिक जलयान तथा वायुयान गायब हो चुके हैं। आज तक भी इन पर सवार लगभग 1000 लोगों का पता नहीं चला है। 1945 की एक शाम को अमेरिकी नौ सेना के पांच विमानों ने उड़ान भरी। इन पांचों विमानों की सम्मिलित उड़ान का नाम था– 'उड़ान 19' तथा इन विमाानों में कुल 14 लोग सवार थे। 3 बजकर 19 मिनट पर जब लोग इन विमानों के वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तभी अजीबो–गरीब सूचना आयी और वे चौंक पड़े। 'नियंत्रण कक्ष' में उड़ान के कप्तान चार्ल्स टेलर की धीमी आवाज सुनाई दी– ''हैलो कंट्रोल! हम बरमूदा क्षेत्र में थे, उसी समय हमें लगा कि हमारे विमान हमारे निर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं। हमें जमीन नहीं दिख रही है और लग रहा है कि हम निर्धारित रास्ते पर नहीं बढ़ रहे हैं।''

तुरन्त ही नियंत्रण कक्ष टावर ने आकाश की स्थिति जाननी चाही, तो टेलर का जवाब आया, ''हमें कुछ पता नहीं चल पा रहा है कि हम कहाँ हैं?'' हर चीज अब गड़बड़ हो रही है। हमें अब सागर भी सागर की तरह नजर नहीं आ रहा है। हे भगवान! यह क्या... और इसके साथ ही उड़ान–19 का सम्पर्क सदा के लिए टूट गया। उड़ान केन्द्रों पर खलबली मच गयी और पूरे नौ सैनिक अड्डे पर आग की तरह यह खबर फैल गयी। तत्काल लापता विमानों की खोज के लिए दो इंजन वाला राहत विमान 'मार्टिन मैरीनर' उड़ा। थोड़ी देर बाद 'मार्टिन मैरीनर' से संदेश आया, ''हम जहाँ उड़ रहे हैं, वहाँ अजीब तरह की हवाएं चल रही हैं।''

'मार्टिन मैरीनर' से प्राप्त यह पहला और अंतिम संदेश था क्योंकि इसके बाद उसका सम्पर्क भी नियंत्रण कक्ष से टूट गया। इसके बाद शुरू हुई इतिहास की सबसे बड़ी खोजों में से एक, जिसमें तीन सौ वायुयान, चार विध्वसंक जहाज, सात पनडुब्बियां, अठारह कोस्टल गार्ड नौकाएं और दो सौ अठारह शौकिया खोज करने वाली नौकायें थीं। वायुयानों ने रोज कई सौ उड़ानें भरीं और तीन लाख अस्सी हजार वर्गमील से भी अधिक क्षेत्र का चप्पा–चप्पा छान मारा। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि उन्हें न तो जीवन नौकायें और सवार मिले और न ही जहाज के टुकड़े।

उड़ान–19 के बारे में एक रहस्यमय सत्य उस समय सामने आया, जब एक संवाददाता ने

अपनी पुस्तक में लिखा कि टेलर द्वारा भेजा गया आखिरी संदेश था, ''अब हमारे पीछे मत आओ... लग रहा है कि वे लोग किसी दूसरी दुनिया के लोग हैं।''

इसके बाद एक–एक कर कई विमान 'बरमूदा त्रिकोण' क्षेत्र में गायब होते रहे, खोज चलती रही लेकिन नतीजा नहीं निकला। इनमें से एक था, डी.सी. 3 यात्री विमान और उसके कप्तान का आखिरी सन्देश था, ''हम तेजी से भूमि की ओर बढ़ रहे हैं और हमें मियामी शहर की रोशनियां भी दिखाई देने लगी हैं।''

बस, इसके बाद न कभी वह जहाज मियामी की हवाई पट्टी पर उतरा और न ही उसकी कोई सूचना मिली। आश्चर्य की बात तो यह थी कि जो विमान हवाई पट्टी से कुछ मिनटों की दूरी पर था और जो ऐसे सागर पर उड़ रहा था, जहाँ बीस मीटर नीचे तक का पानी साफ दिखाई देता था, आखिर कहाँ गया? उसका भी न तो मलबा मिला और न ही सागर की सतह पर तेल फैला मिला।

ऐसा नहीं है कि सिर्फ बड़े–बड़े विमान ही इस क्षेत्र में गायब होते रहे हैं, छोटे–छोटे विमान तो सैंकड़ों की संख्या में यहाँ गायब हुए हैं।

जलयानों के गायब होने की कहानी आरम्भ हुई है, 'यू.एस.एस. पिकरिंग' से जो 20 अगस्त 1800 के दिन एकाएक गायब हो गया था। इसके बाद 1880 तक चार अन्य जहाज गायब हुए। 1880 के अन्त में यू.एस.एस. अटलांटा जहाज बरमूदा से इंग्लैंड की ओर रवाना हुआ, जिस पर 290 यात्री सवार थे। बरमूदा तट छोड़ने के थोड़ी ही देर बाद वह गायब हो गया। लोगों को पूरा विश्वास है कि वह जहाज डूबा नहीं क्योंकि आज तक न उसका मलबा प्राप्त हुआ और न ही बाद में उसका कोई यात्री जीवित देखा गया।

कुछ वर्ष पूर्व ब्राजील के युद्धपोत 'साओपाडले' के साथ हादसा हुआ। इस जहाज को दो मोटर नौकाएं खींचकर तट की ओर ला रही थीं क्योंकि इसमें तकनीकी खराबी आ गई थी। रात को एकाएक सागर बहुत अशांत हो गया और सवेरे मोटर नौकाओं ने पाया कि 'साओपाडले' गायब है। तुरन्त बंदरगाहों को सूचना दी गयी और खोज आरम्भ हुई। रात को इस क्षेत्र की उड़ान भरने वाले वायुयानों ने जो सूचना दी वे कम चौंकाने वाली नहीं है। उनके अनुसार रात को जहाज गायब होने वाले क्षेत्र में अजीब तरह की रोशनियां देखी गयी थीं, जिनके वहाँ होने का कोई औचित्य नहीं था।

बरमूदा त्रिकोण में जहाजों के गायब होने से भी अधिक विचित्र बात है, ''गायब हुए कुछ जहाजों का पुनः प्रकट हो जाना।'' पुनः प्रगट हो जाने वाला पहला जलयान था 'रोजेली'। यह एक फ्रांसीसी जलयान था, जो हवाना जा रहा था। यह जलयान गायब होने के कुछ दिन बाद फिर तैरता हुआ पाया गया, लेकिन इसके सभी यात्री गायब थे। मजे की बात यह है कि जलयान अपने पूर्व निर्धारित मार्ग पर बढ़ रहा था। जहाज का सारा समान सुरक्षित था। इसलिए यह भी नहीं माना जा सकता कि वह किसी जलदस्युओं के हमले का शिकार हो गया था। इसी तरह कई अन्य जहाज गायब होकर प्रकट हुये, लेकिन उनके यात्री गायब थे।

इस तरह की सबसे अजीबो–गरीब घटना घटी, अमेरिकी जहाज 'एलेन ऑस्टिन' के साथ।

इस जहाज ने बरमूदा क्षेत्र में तैरते समय एक जहाज देखा, जिसके सभी यात्री गायब थे। एलेन ऑस्टिन के कप्तान ने तुरन्त कुछ अनुभवी अधिकारियों और नौ सैनिकों को उस जहाज पर भेजा ताकि उसे सुरक्षित जांच के लिए किनारे पर लाया जा सके। उस जहाज को भेजे गये कर्मचारियों ने चलाया ही था कि समुद्र में भयंकर तूफान उठा और दोनों जहाजों का सम्पर्क टूट गया। दो दिनों की खोज के बाद 'एलेन ऑस्टिन' के कप्तान ने फिर उस जहाज को देखा, लेकिन यह पता लगने पर हैरान रह गया कि उस पर भेजे गये सभी अधिकारी और कर्मचारी गायब थे। इस बार कप्तान की हिम्मत नहीं हुई कि वह नये लोगों को उस जहाज पर भेजता। पूरे दिन उस जहाज की निगरानी की गयी। लेकिन रात होते–होते एक बार फिर समुद्री आंधी आयी और जहाज गायब हो गया। इसके बाद न कभी वह जहाज दिखा और न ही उन लोगों का पता चला जो उस जहाज पर थे।

बरमूदा त्रिकोण के रहस्य के उद्घाटन के लिए वैज्ञानिकों ने अनेक दलीलें दी हैं। कुछ लोग इस रहस्य का कारण भुचुम्बकत्व जैसी घटनाओं को मानते हैं। जबकि कुछ लोगों का यह भी अनुमान है कि किसी सुदूर खगोलीय पिंड के निवासी जो शायद मनुष्य से कहीं अधिक विकसित और बुद्धिमान हैं, इस स्थल विशेष पर जलयान और वायुयानों को गायब कर देते हैं। यह एकदम कपोल कल्पना प्रतीत होती है। बहरहाल बरमूदा त्रिकोण का रहस्य अब भी रहस्य ही है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

वाह! यहाँ पर कितना अच्छा मौसम है।
दोपहर बाद ...
क्या किट्टी तुम्हारे घर पर आई है?
नहीं; हमारे घर नहीं आई।
शाम को ...
देखो! किट्टी बेटा, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।

किट्टी तो सुबह बाजार गई थी। अभी तक बाजार से नहीं आई, पता नहीं कहाँ पर होगी?
हम सब अभी किट्टी को ढूंढने जाते हैं।
हम सब अभी किट्टी को ढूँढने जाते है।
क्यों न हम सब अलग-अलग जगह पर जाकर किट्टी को ढूंढें?
अरे! किट्टी बेटा क्या हुआ? तुम यहाँ पर क्या कर रही हो?

अरे! किट्टी तुम यहाँ बैठी हो। हम सब तुम्हारे लिए कितने परेशान थे? तुम यहाँ क्यों बैठी हो?
पापा, मुझे अभी घर नहीं जाना।
पर क्यों बेटा क्या तुम्हारी मम्मी तुमसे काम करवाती है इसीलिए।
बेटा, बच्चों को काम सीखाने के लिए मम्मी पापा को उनसे काम करवाना पड़ता है। अगर बच्चे काम नहीं करेंगे तो वह सींखगे कैसे?
किट्टी! मम्मी मुझे माफ़ कर दो, अब
होगी? मैं अब से हर काम करूँगी।

बाल कहानी : राजेन्द्र यादव 'आजाद'

षड्यंत्र

चम्पकवन में सदियों से अमन–चैन कायम था। यहाँ के सभी जानवर आपस में भाईचारे के साथ रहते थे। लेकिन पिछले कुछ दिनों से चम्पकवन जातीय हिंसा की आग में जल उठा।

चम्पकवन में रहने वाले लंगूरों व बन्दरों में पिछले कुछ वर्षों से छोटी–छोटी बातों को लेकर आपसी लड़ाई–झगड़ा होना प्रारम्भ हो गया जो वर्तमान में जातीय संघर्ष में परिवर्तित हो गया।

चम्पकवन का राजा बहादुर सिंह राज्य में शान्ति कायम करने के सभी प्रयास कर चुका लेकिन वन में शान्ति स्थापित नहीं हो पायी। चम्पकवन के राजा ने अपने प्रधानमंत्री दीनू हाथी व पुलिस के आला अधिकारी वीरू चीते को हिदायत दी कि किसी भी सूरत में चम्पकवन में शान्ति स्थापित होनी ही चाहिए।

चम्पकवन में इन लोगों ने शान्ति समितियों की स्थापना कर जातीय हिंसा रोकने का प्रयास किया लेकिन वे सफल नहीं हो पाये। इस हिंसा में अनेक लंगूर व बन्दर काल के मुँह में समा गये। चम्पकवन में रहने वाले अन्य जानवर वन छोड़कर जाने लगे तो राजा बहादुर सिंह ने उनसे कहा– आप यहीं रहकर मेरा साथ दें। वन में शान्ति अवश्य कायम होगी। हमारा प्रयास है कि जंगल के सभी प्राणियों की रक्षा हो। आप अफवाहों पर ध्यान नहीं दें। वे आज नासमझी से कार्य कर रहे हैं। यह किसी का षड्यंत्र है जो हमें हतोत्साहित करने के लिए दोनों जातियों को आपस में लड़ा दिया गया है। लेकिन हम आपसे वादा करते हैं कि हम शीघ्र ही अपने इस स्वर्ग जैसे वन में पुनः शान्ति स्थापित करके रहेंगे। आगे आपकी इच्छा।

अपने राजा की बातें सुनकर अन्य प्राणियों ने चम्पकवन छोड़ने का फैसला त्याग दिया।

चम्पकवन में भड़की जातीय हिंसा को मोनू लंगूर व चीनू बन्दर अपने जहरीले भाषणों से और अधिक भड़का रहे थे। बन्दरों व लंगूरों की आपसी लड़ाई का फायदा उठाकर कुछ असामाजिक तत्वों ने चम्पकवन के दुकानदारों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। लूट के डर से बाजार बन्द हो गया। वन में अराजकता का माहौल बन गया।

एक दिन कालू कौवे ने अपने राजा को बताया कि इस वन में आग भरत लोमड़ ने लगाई है। वह आपसे वैर रखता है। उसी ने मोनू लंगूर व चीनू बन्दर को रुपयों का लालच देकर लंगूरों व बन्दरों के मध्य लड़ाई करवाई है जो अब जातीय हिंसा में बदल गई है।

राजा बहादुर सिंह बोला– तुम्हें कैसे पता?

कालू कौआ बोला– महाराज! मैं भी इस वन में रहता हूँ और आपकी प्रजा हूँ। वन में फैली अराजकता मैं कैसे सहन कर सकता हूँ। इसीलिए मैंने मोनू व चीनू की हरकतों पर नजर रखना प्रारम्भ किया तो एक दिन रात के अंधेरे में मैंने उन दोनों को पहाड़ी की तरफ जाते देखा तो मुझे शक हुआ कि एक–दूसरे के प्रति जहर उगलने वाले साथ–साथ जा रहे हैं। मैं भी उनके पीछे–पीछे चल पड़ा। वे दोनों पहाड़ी पर जाकर एक गुफा में प्रवेश कर गये। वहाँ भरत लोमड़ व उसके कुछ साथी पहले से ही उनका इन्तजार कर रहे थे। उनके गुफा में प्रवेश करते ही भरत लोमड़ ने उन्हें गले लगा लिया और कहा कि तुमने चम्पकवन में जो हिंसा फैलाई है उससे मैं बहुत खुश हूँ।

प्रधानमंत्री दीनू हाथी यह रहस्य सुनकर चौंका और कालू से बोला– हम तुम पर विश्वास कैसे करें कि तुम सच बोल रहे हो। हो सकता है तुम हमें बरगला रहे हों।

कालू बोला– आप ठीक कह रहे हैं महाराज! हो सकता है मैं झूठ बोल रहा हूँ। मगर मैं आपको मेरे मोबाइल में बंद कुछ वीडियो क्लिप दिखाऊंगा। जिसे देखकर आप स्वतः ही मुझ पर विश्वास करेंगे।

इतना कहकर उसने मोबाइल के वीडियो क्लिप राजा बहादुर सिंह व प्रधानमंत्री दीनू हाथी को दिखलाये। वे दोनों वीडियो क्लिप देखकर दंग रह गये।

उन्होंने देखा कि गुफा में बन्दर जाति का मुखिया चीनू व लंगूर जाति का मुखिया मोनू भरत लोमड़ के साथ चम्पकवन को बर्बाद करने का षड्यंत्र रच रहे हैं।

राजा बहादुर सिंह खुश होकर बोला– शाबाश! कालू तुमने एक अच्छे नागरिक का धर्म निभाया है।

कालू कौआ बोला– महाराज! यह तो मेरा धर्म था।

राजा बहादुर सिंह ने अपने प्रधानमंत्री दीनू हाथी व पुलिस के आला अधिकारियों के साथ बैठक कर वीरू चीते के नेतृत्व में भरत लोमड़ की गुफा पर पुलिस कार्यवाही करने का आदेश दिया।

वीरू चीते ने अपने सिपाहियों के साथ गुफा को चारों तरफ से घेर लिया और सभी को गिरफ्तार कर राजा बहादुर के दरबार में पेश किया गया। उन पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चम्पकवन के कानून की विभिन्न धाराओं के तहत चलाया गया।

न्यायप्रिय राजा ने तीनों को उम्रभर कैद में रहने की सजा सुनाई तो चम्पकवन की प्रजा भड़क उठी। उनकी मांग थी कि इन देशद्रोहियों को फांसी की सजा दी जाए।

राजा बहादुर सिंह ने प्रजा को सम्बोधित करते हुए कहा– मेरी प्यारी प्रजाजन! मैं तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता हूँ। इनका कृत्य क्षमा योग्य नहीं है। फिर भी आप इन्हें क्षमा कर दें। फांसी की सजा से ये लोग एक झटके में मर जाएंगे। लेकिन उम्र कैद से ये लोग जीवनभर कैद में रहकर पल–पल मरेंगे। यही नहीं अपनों से बिछुड़कर इन्हें जो दुख होगा वह फांसी की सजा से भी बढ़कर दर्द होगा।

अपने राजा की बात सुनकर प्रजा शान्त हो गई। लंगूर व बन्दर जाति के लोग अपने समाज के नेताओं की हकीकत से वाकिफ हो चुके थे।

एक बार पुनः चम्पकवन में शान्ति बहाल हो गयी। सभी जानवर आपस में भाईचारे व प्रेमभाव से रहने लगे।

राजा बहादुर सिंह ने जंगल दिवस के अवसर पर इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करने वाले कालू कौवे, वीरू चीते व पुलिस के जवानों को सम्मानित किया एवं कालू कौवे को पुलिस विभाग में जासूस अधिकारी के रूप में नियुक्त कर दिया। अब वह जंगल में हर गतिविधि की खबर रखने लगा।

जंगल दिवस पर चम्पकवन के सभी जानवरों ने आपसी भाईचारे व प्रेम भाव से रहने की कसम खाई एवं भविष्य में किसी भी षड्यंत्र का शिकार नहीं बनने की भी प्रतिज्ञा ली। एक बार पुनः कुछ दिनों की परेशानी के बाद चम्पकवन के सभी जानवर आपस में प्रेमभाव से रहने लगे।

कविता : कमलसिंह चौहान

सब खेलो होली

सियार ने बिगुल बजाया,
सोया जंगल देखो जागा।
बंदरिया ने मारी पिचकारी,
बंदर उठा सरपट भागा।

छलांग लगाये खरगोश आया,
भालू ने सुरताल मिलाया।
हाथी दादा झूमते आये,
मनाने होली हर कोई भागा।

सब बैठे वृक्षों के नीचे,
गिलहरी बोली आंखें मीचे।
हिलमिल कर सब होली खेलो,
शेर के भीतर राजा जागा।

पिचकारी अब सबने थामी,
तोता मैना नामी गिरामी।
जी भरकर रंग डाला सबने,
प्रेम प्यार अब सबमें जागा।

विश्व की सबसे लम्बी रेल सुरंग

विश्व में अनेक ऐसी सुरंगें हैं जो अपनी लम्बाई के लिए मशहूर हैं। इन सुरंगों का निर्माण आवागमन में सुविधा की दृष्टि से किया गया है।

सीकन रेल सुरंग

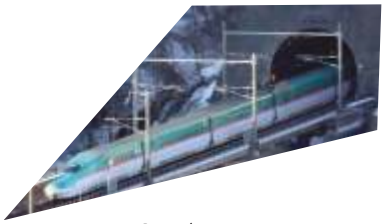

जापान में स्थित 53.85 किलोमीटर लम्बी यह रेल सुरंग वर्तमान समय में सबसे लम्बी रेल सुरंग है। इस सुरंग का 23.3 किलोमीटर का भाग समुद्र तल के नीचे स्थित है। सन् 1988 से शुरू हुई यह सुरंग जापान में होंशू के मुख्य टापू तथा होक्काइडो के उत्तरी टापू को जोड़ती है।

चैनल सुरंग

इंग्लैंड और फ्रांस को जोड़ने वाली यह सुरंग 50.5 किलोमीटर लम्बी है। जिसका 37.9 किलोमीटर हिस्सा समुद्र के नीचे स्थित है। संसार में किसी भी सुरंग का इतना बड़ा हिस्सा समुद्र के नीचे नहीं है। यह रेल सुरंग फ्रांस के उत्तरी तट तथा इंग्लैंड के दक्षिणी तट को जोड़ती है। 6 मई 1994 को इस सुरंग की शुरुआत की गयी।

लॉट्शबर्ग सुरंग

34.57 किलोमीटर लम्बी यह रेल सुरंग स्विट्जरलैंड में आल्प्स के लॉट्शबर्ग पर्वत की शाखाओं से होकर गयी है। वर्तमान समय में यह विश्व की सबसे लम्बी जमीनी सुरंग (लैंड टनल) है जो सन् 2007 से मानव के उपयोग में आ रही है।

गुडार्रम सुरंग

स्पेन की 28.4 किलोमीटर लम्बी यह सुरंग सेविली के निकट गुडार्रम पर्वत श्रृंखला से होकर निकलती है। ट्रैफिक के लिए यह सुरंग वर्ष 2007 में खोली गयी। मैड्रिड तथा वेलाडोलिड रूट की इस सुरंग का प्रयोग ए वी ई हाई स्पीड ट्रेनों के लिए किया जाता है।

सबसे लम्बी सुरंग

स्विट्जरलैंड स्थित आल्प्स पर्वत में विश्व की सर्वाधिक लम्बी सुरंग की खुदाई का काम पूर्ण हो चुका है। गॉथथर्ड बेस लिंक की खुदाई का काम 15 वर्षों के बाद पूर्ण कर लिया गया। 57 किलोमीटर लम्बी यह सुरंग इटली के मिलान तथा स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख के मध्य यात्रा में लगने वाले समय को डेढ़ घंटा कम कर देगी तथा इससे वक्त की बचत होगी। इसके चालू हो जाने के उपरान्त यह विश्व में सर्वाधिक लम्बी सुरंग होगी।

कविता : सुनैना अवस्थी

कहानी होली की

होली का त्योहार निराला, रंग–बिरंगे रंगों वाला।
आओ तुमको आज बताते, क्यों हम ये त्योहार मनाते।।

हिरण्यकश्यप नामक राजा, था अति अत्याचारी।
खुद को राम कहाता था वो, कंपित थे नर–नारी।।

एक पुत्र का जन्म हुआ जब, उस राक्षस के घर,
नाम रखा प्रहलाद, मिठाई बांटी थी घर–घर।।

पुत्र राम का भक्त हुआ, 'श्री नारायण हरि' गाता।
'हरि' का नाम सुनें जब राजा, अति क्रोधित हो जाता।।

बहुत प्रताड़ित किया उसे, हर हथकंडे अपनाये।
किंतु 'हरी' का नाम जुबां से, उसकी छुड़ा न पाये।।

उस राक्षस की एक बहन थी, उसको था वरदान।
नहीं अग्नि के बीच जलेगी, उसे भी था अभिमान।।

उसे बुला हिरण्यकश्यप ने यह आदेश सुनाया।
ले प्रहलाद गोद में बैठो, अग्नि में जाए जलाया।।

जली राक्षसी भस्म हुई तब, हाय–हाय चिल्लाते।
अग्नि कुंड से बाहर बेटा, आया 'हरि' गुण गाते।।

तब से यह त्योहार मनाते, हम होलिका जलाते।
जीत हुई अच्छाई की, हम रंग अबीर उड़ाते।।

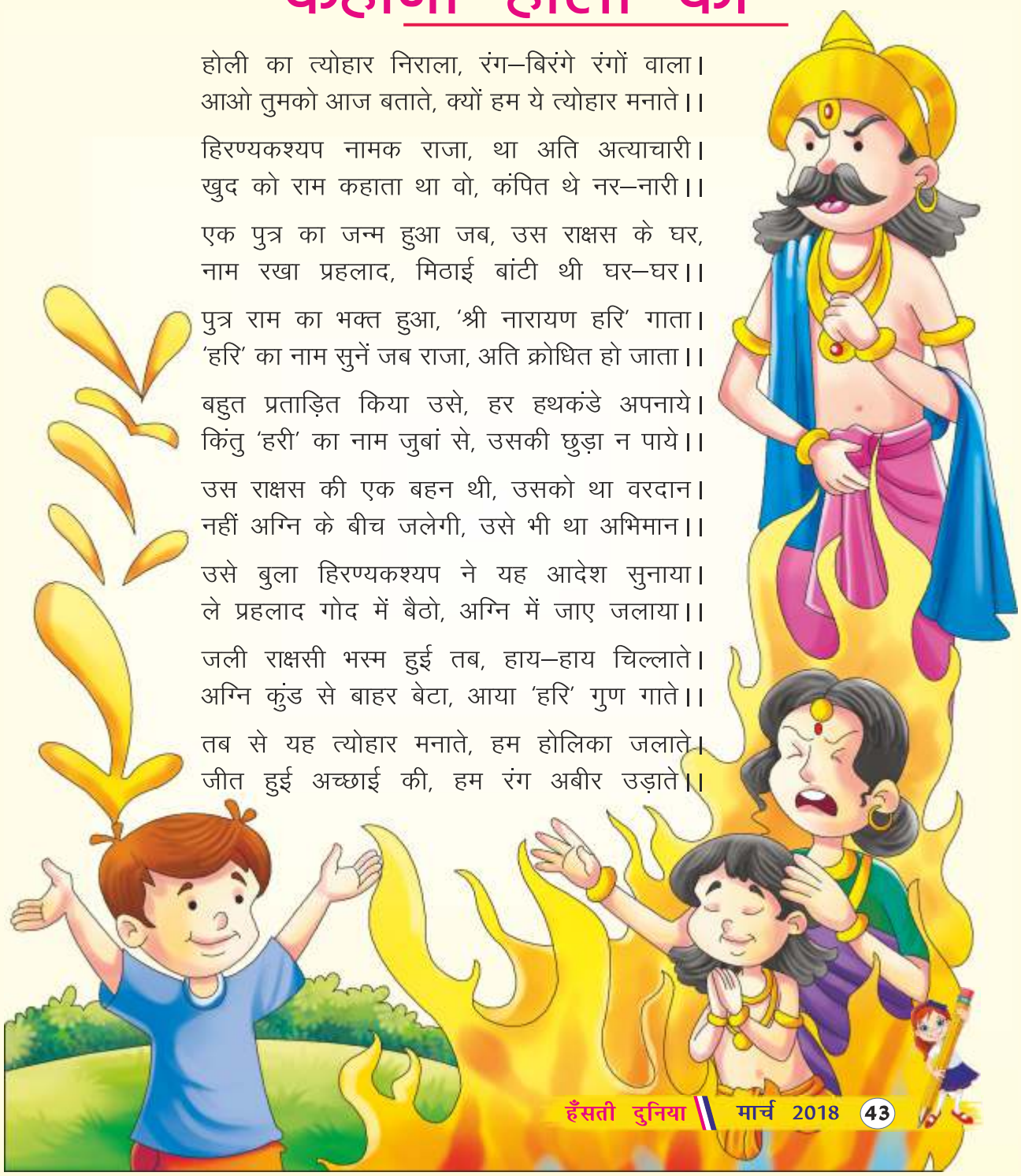

पढ़ो और हँसो

रामू के दोनों कान जल गये। वह डॉक्टर के पास गया।

डॉक्टर ने पूछा– यह कैसे हुआ?

रामू : मैं कपड़े प्रेस कर रहा था। तभी फोन बजा, मैंने जल्दी में गलती से फोन की जगह प्रेस कान पर लगा ली।

डॉक्टर : लेकिन यह दूसरा कान कैसे जला?

रामू : बात यह है कि थोड़ी देर बाद फिर फोन आ गया था।

★----------★

भिखारी: बहन जी, भूखा हूँ। थोड़ा खाना दे दो।

गृहिणी : खाना अभी पका नहीं है।

भिखारी: कोई बात नहीं। आप मेरा फोन नम्बर लिख लो। जब खाना तैयार हो जाएगा तो मैसेज कर देना।

– इन्द्रा अरोड़ा (गुड़गाँव)

★----------★

मालिक : (नौकर से) रामदीन, क्या तुम्हें पता है मैं एक घंटे से घंटी बजा रहा हूँ।

नौकर : साहेब, आप मालिक हैं। एक घंटा क्या, आप दिनभर घंटी बजा सकते हैं।

★----------★

गैरेज के मालिक को जोर–जोर से खर्राटे लेते देख उसके स्टाफ को सोने में दिक्कत हो रही थी। जिस कारण उन्होंने मालिक के नाक में ही 'मोबिल आयल' डाल दिया। थोड़ी देर बाद जब मालिक जगा तो स्टाफ पर काफी गुस्सा होने लगा।

बेचारा स्टाफ डरते–डरते बोला– आप ही तो कहते हैं कि किसी भी चीज में से आवाज निकले तो उसमें 'मोबिल' डाल देना चाहिए।

★----------★

डॉक्टर : इस दवा को एक हफ्ते में खत्म करो और बाद में आकर दिखाओ।

मरीज : ठीक है डॉक्टर साहब।

(एक हफ्ते बाद)

डॉक्टर : दवा खत्म हुई क्या?

मरीज : नहीं डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : क्यों नहीं।

मरीज : उस पर लिखा था कि बोतल को हमेशा बन्द रखें।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

रामू : सर, मेरे घर में टीवी को छोड़कर बाकी सबकुछ चोरी हो गया है।

पुलिस : चोर ने सिर्फ टीवी किसलिए छोड़ा होगा?

रामू : मुझे क्या पता सर! मैं उस समय टीवी पर फिल्म देख रहा था।

– राकेश वलेचा (गोन्दिया)

★----------★

एक बच्चा स्कूल से आया तो उसकी माँ उसका खरोचों से भरा चेहरा देखकर गुस्से से बोली– तुमने फिर लड़ाई कर ली किसी बच्चे से? मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि जब कभी भी लड़ाई–झगड़े की नौबत आती दिखाई दे, तुम लड़ने से पहले बीस तक गिनती गिना करो।

बच्चा : (रुआंसा होकर) मालूम है मम्मी, लेकिन दूसरे लड़के की मम्मी ने उसे सिर्फ दस तक ही गिनती गिनने के लिए कहा था।

★----------★

टीचर : क्लास में, दिल्ली में कुतुबमीनार है।

शेरू क्लास में सो रहा था।

टीचर ने उसे जगाया और पूछा– बता मैंने अभी क्या बोला?

शेरू : दिल्ली में कुत्ता बीमार है।

★----------★

पहला दूधिया : एक बार मेरे गाँव में इतनी ठंडी पड़ी कि लोग अपनी गाय–भैंसों को गर्म कपड़े पहनाने लगे।

दूसरा : मेरे गाँव में तो ठंड के कारण गाय–भैंसों ने दूध ही देना बन्द कर दिया।

तीसरा : छोड़ो न! मेरे गाँव में इतनी ठंड पड़ी कि गाय–भैंसों ने दूध की जगह आइसक्रीम देना शुरू कर दिया।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 म	न्दि	2 र		3 खु	र्र	4 म
ह		5 वि	दे	श		स्क
बू		दा		6 मि	7 न	ट
8 बा	9 ई	स	ह	जा	र	
	स्ट			ज		10 फ्रां
11 मा	र	को	12 नी		13 द	स
न			14 र	तौं	धी	
15 व	न	रा	ज		16 चि	ली

कभी न भूलो

★ हे परमेश्वर! हमारे मन को शुभ संकल्प वाला बनाओ। हमें सुखदायी बल और कर्म शक्ति प्रदान करो। – ऋग्वेद

★ अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है।

★ जो अपने हिस्से का काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।

★ आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं जाती। – महात्मा गाँधी

★ जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, वह मनुष्य सदा पाप ही करता है। केवल पुनः पुनः किया हुआ पुण्य ही बुद्धि को बढ़ाता है।
– वेदव्यास

★ प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले भाई से कहीं उत्तम है। – चाणक्य

★ विपत्ति में भी जो इन्सान घबराता नहीं है, वही धीर है। – सोमदेव

★ निरन्तर अथक परिश्रम करने वाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे। – तिरुवल्लुर

★ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा। – स्वेट मार्डेन

★ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।
– चिल्सन

★ अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है। – हार्ट स्वेन्शर

★ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भण्डार है। पत्ते–पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।
– हरिऔध

★ जिसके पास आशा से बंधे कर्म हैं, उसके पास सबकुछ है। – इमर्सन

★ धैर्य रखना मुश्किल काम है, किन्तु उसका फल मीठा होता है। – रामकृष्ण परमहंस

★ समस्त बड़ी गलतियों की तह में अहंकार ही मूल कारण है। – रस्किन

★ कोमल उत्तर से क्रोध शान्त हो जाता है, कटु वचन से उठता है। – बाइबिल

★ जो बाहोश है, वह कभी घमंड नहीं करता।
– शेख सादी

★ अहंकार नर्क का मूल है। – महाभारत

★ जीतता वही है, जिसमें धैर्य, साहस और सत्य होता है। – हजारीप्रसाद द्विवेदी

★ महान पुरुष की पहली पहचान है उसकी नम्रता। – स्टेविस्ला लेक

★ नम्रता के पीछे स्वार्थ हो तो वह ढोंग है।
– बीचर

★ विनय स्वयं का ठीक–ठाक मूल्यांकन है।
– स्पंजन

★ व्यक्ति गर्व की अपेक्षा विनयशीलता से अधिक प्राप्त कर लेता है। – कहावत

★ आप किसी व्यक्ति को धोखा देते हैं तो आप अपने आपको भी धोखा देते हैं।
– इसाक बेशविस सिंगर

– संग्रहकर्ता : जगतार चमन (अनूपगढ़)

कविता : हरजीत निषाद

भगत सिंह थे राष्ट्रवीर

भगत सिंह थे राष्ट्रवीर बलवान महान।
राष्ट्रभक्ति की तरुणाई की थे पहचान।
उन्नत माथा चौड़ी छाती योद्धा की,
युवा शक्ति के थे प्रतीक थी ऊँची शान।

कफ़न बाँध कर सिर पर हो बेखौफ चले।
फांसी के फंदे चूमे वो दौर चले।
आजादी पाने की ठानी वीरों नें,
चीर के काली रात सुबह की ओर चले।

बलिदानों को न भूलेगा देश अपना।
इस मिट्टी को चूम चलेगा देश अपना।
न्यौछावर कर देंगे इस पर जान अपनी,
नई सदी की शान बनेगा देश अपना।

प्रेरक–प्रसंग : विभा वर्मा

तीन बातें

उन्नीसवीं शताब्दी की बात है। बंगाल के मेदिनीपुर जिले के वीर सिंह नामक गाँव में एक बालक अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन बालक ने माँ से कहा– माँ मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ गहने बनवाऊँ।

यह सुनकर माँ बोली– हाँ बेटा, बहुत दिनों से मुझे तीन गहनों की चाह है।

–कौन से तीन गहने?– बालक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

–बेटा! एक, इस गाँव में स्कूल नहीं है इसलिए एक अच्छे स्कूल की स्थापना।

दो, दवा के लिए दवाखाना और

तीन, गरीब व अनाथ बच्चों के लिए कुछ खाद्य–सामग्री का वितरण। बस यही मेरे तीन गहने हैं।– माँ ने कहा।

माँ की बात सुनकर बालक की आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे। उसने माँ के लिए तीन गहने बनवा दिए। बंगाल में आज भी 'भगवती विद्यालय' इसका साक्षी है। ऐसी माँ थी भगवती और उनका पुत्र का नाम पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर था।

जनवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **प्रीति** 11 वर्ष
बी.ई.एल. कालोनी, कोटद्वार,
पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)

2 **चिंकी** 12 वर्ष
138, वॉर्ड नं. 12,
कलंदर चौक, पानीपत (हरि.)

3 **लक्ष्य गुप्ता** 10 वर्ष
268, सेक्टर 16,
पंचकुला (हरि.)

4 **कुनिका गर्ग** 11 वर्ष
35, भारद्वाज कालोनी,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

5 **अधृत गुलाटी** 7 वर्ष
2252-ए, सेक्टर 42-सी,
चंडीगढ़

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सेफाली (सुरैला), अनिशा (बेमलोल चौक, शिमला), गुरमीत (गाजीपुर, अम्बाला), संतुष्ट (सूरतगढ़), सुजाता कुमारी (पंजाला, कांगड़ा), मानवी (ठाणे, मुम्बई), समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर), आर्या (लश्कर, ग्वालियर), दीप्ती (एच.बी.सी. धनास, चंडीगढ़), स्नेहा (ठाकुरपुरा, अम्बाला), कार्तिक (दुग्गरी, लुधियाना), मान्या (नौशेरा, कांगड़ा), सिमरण (आदर्श नगर, फगवाड़ा), रत्तिका (कुरूक्षेत्र), आरती (भटिण्डा), स्वाति (गोविन्दगढ़, देहरादून), शगुन (जीरकपुर), कृष्णाराज (गुलबर्ग), आकृति (कैलाशपुरी, बांदा), पल्लवी, संजना, निशा, मुक्ति, (महोबा), तक्षा, सोमजनी, आयूषी, कृष्णा भाषणी, साहिल, देव एवं कृष्णा चेलारमनी (गोधरा)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मार्च तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009** को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **मई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

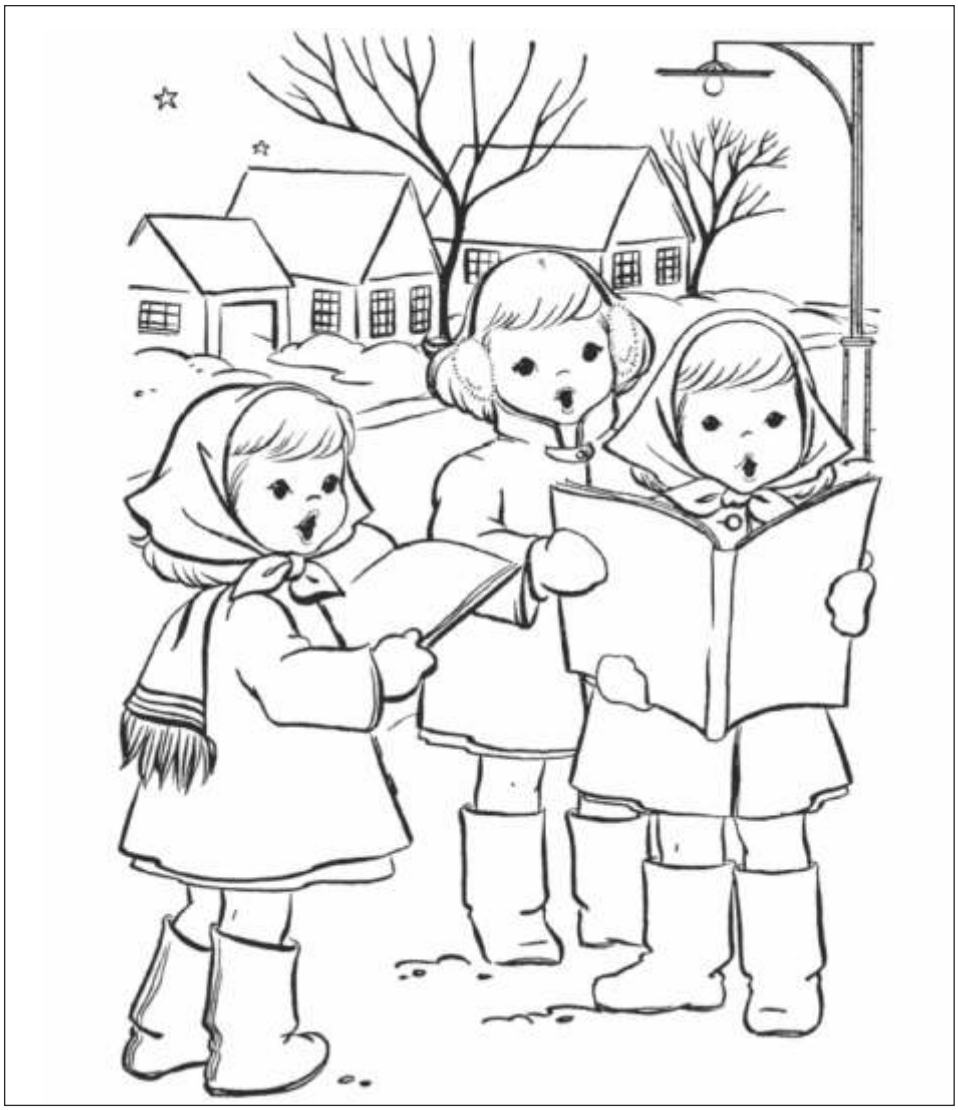

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र

नवम्बर एवं दिसम्बर 2017 अंक प्राप्त हुए। दोनों के मुखपृष्ठ बड़े आकर्षक बने हैं। नवम्बर के मुखपृष्ठ को देखते ही पौराणिक बोधकथा समझ में आ जाती है। 'बैक कवर' पेज पर भी बड़ी आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है। हम 'क्विज कम्पीटिशन' में यह प्रश्न पूछते हैं कि निरंकारी पत्र–पत्रिकाएं कितनी भाषाओं में प्रकाशित होती हैं और कौन–कौन सी?

नवम्बर अंक में सबसे पहले में 'जाग्रत बनें' में बहुत ज्ञान की बात कही गई है कि हमेशा हमें दूसरे के दृष्टिकोण से भी बात समझनी चाहिये तभी हम जीवन में खुशियां प्राप्त कर सकते हैं। सभी लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक व अच्छे हैं खासकर 'खिलाड़ियों की लाडली' लेख पसन्द आया।

दिसम्बर अंक का मुखपृष्ठ देखकर अंतरिक्ष के बारे में जानकारी मिलती है। सभी लेख बहुत ही अच्छे हैं। खासतौर पर प्रेरक–प्रसंग 'हिम्मत न हारी' एवं 'अनोखा घुड़सवार' बहुत ही प्रेरणादायक हैं। 'वृक्षों में आत्मा' में जगदीशचन्द्र बसु का विलक्षण आत्मविश्वास सच में सराहना के योग्य है।

'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' व 'जासूसी जूते' जैसी वैज्ञानिक जानकारियां आज के समय की मांग है। इस पत्रिका से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

–अमिता मोहन (भटिंडा)

हँसती दुनिया के पाठकों की उपलब्धियां

लखनऊ में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उप–कुलपति प्रो. आर. सी. सोबती द्वारा बहन अनीता को एम.ए. (हिन्दी) में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। अनीता सन्त निरंकारी सेवादल की सक्रिय सदस्य है। हँसती दुनिया परिवार की हार्दिक शुभकामना है कि ये हमारी पाठिका जीवन में और सफलताएं प्राप्त करें।

अजीत सिंह को पी.एच.डी. की उपाधि

दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में हँसती दुनिया परिवार के सदस्य अजीत सिंह को पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। अजीत सिंह ने अपना रिसर्च कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग से सफलतापूर्वक पूरा किया है।

हँसती दुनिया परिवार की ओर से बधाई।

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)